के.डी.न्यूज

सुलतानपुर से प्रकाशित

हिन्दी दैनिक

UPHIN 47497

वर्ष–01 अंक 10 सुलतानपुर गुरूवार 14 नवम्बर 2024

मूल्य : दो रूपया पृष्ठ : 4

कांग्रेस पर अमित शाह का तंज, बोले– सोनिया जी, आपके राहुल विमान का 21वीं बार भी क्रैश होना तय

एजेंसी।

नई दिल्ली गृह मंत्री ने कहा कि मोदी जी ने राम मंदिर बनवाया और औरंगजेब द्वारा तोड़े गए काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का भी निर्माण करवाया। अब आप गुजरात आने की तैयारी कर लेना, क्योंकि सोमनाथ का मंदिर भी सोने का बन रहा है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने महाराष्ट्र में चुनाव प्रचार के बहाने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा है। जिंतूर में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए अमित शाह ने चुटकी लेते हुए कहा कि सोनिया जी ने राहुल बाबा नाम के विमान को 20 बार उतारने की कोशिश की, लेकिन बीसों बार विमान 'क्रैश' हो गया। अब फिर से विमान को 21वीं बार महाराष्ट्र में उतारने की कोशिश की जा रही है। सोनिया जी, आपका राहुल विमान 21वीं बार भी क्रैश होने जा रहा है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि 20 नवंबर को होने वाले महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में इसका एक बार फिर क्रैश होना तय है। शाह ने कहा कि अभी–अभी राहुल बाबा की पार्टी कांग्रेस और उनके साथियों ने कश्मीर में प्रस्ताव पारित किया है कि हम कश्मीर में धारा 370 को वापस लेकर आएंगे। राहुल बाबा कान खोलकर सुन लो, आप तो क्या आपकी चौथी पीढ़ी धारा 370 को वापस नहीं ला सकती। उन्होंने कहा कि मनमोहन सिंह जी हमारे देश के अर्थतंत्र को 11वें नंबर पर छोड़ कर गए थे, मोदी जी ने 10 साल के भीतर ही देश के अर्थतंत्र को 5वें नंबर पर लाने का काम किया है। मैं आपसे वादा करता हूं कि मात्र 2 साल में यानी 2027 तक हम विश्व का तीसरे नंबर का अर्थतंत्र बन जाएंगे।गृह मंत्री ने कहा कि मोदी जी ने राम मंदिर बनवाया और औरंगजेब द्वारा तोड़े गए काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का भी निर्माण करवाया। अब आप गुजरात आने की तैयारी कर लेना, क्योंकि सोमनाथ का मंदिर भी सोने का बन रहा है। उन्होंने कहा कि अघाड़ी की सरकार ने 4 हजार करोड़ की मराठवाड़ा जलग्रिड योजना को रोक दिया था। इसके कारण अकालग्रस्त मराठवाड़ा को पानी नहीं मिल पाता था। 2019 में हमारे नेता देवेंद्र फडणवीस जी ने इस योजना को आगे बढ़ाने का काम किया था। लेकिन उद्धव जी की सरकार आते ही इसे फिर रोक दिया गया था। लेकिन मैं कहकर जाता हूं कि यहां के हर खेत में पानी पहुंचाने का काम हमारी महायुति सरकार करेगी। अमित शाह ने कहा कि हम तो शिवाजी महाराज के रास्ते पर चलने वाले लोग हैं ।

मंडलस्तरीय बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता के दूसरे दिन बाल खिलाड़ियों ने बहाए पसीने

गोरखपुर । रीजनल स्पोर्ट्स स्टेडियम, गोरखपुर में तीन दिवसीय मंडलस्तरीय बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता (12– 14 नवंबर) का द्वितीय दिवस पर गोरखपुर मंडल के चारों जिलों गोरखपुर, देवरिया, महराजगंज और कुशीनगर से आए हुए बेसिक के बच्चों ने बढ़चढ़ कर प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में मंडलीय बेसिक सहायक शिक्षा निदेशक विनोद कुमार मिश्रा, रमेंद्र कुमार सिंह (जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी) नोडल अधिकारी नरेंद्र सिंह, डॉ प्रभात राय सहित कई अधिकारी शामिल हुए। प्राथमिक स्तर में कबड्डी, खो–खो, लंबी कूद की प्रतियोगिताए हुई। साथ ही उच्च प्राथमिक स्तर में 600 मीटर बालक – बालिका, कुश्ती, बैडमिंटन, हॉकी, क्रिकेट, जूडो, गोला क्षेपण, चक्र क्षेपण, हैंडबॉल, बास्केटबॉल, लंबी कूद, ऊंची कूद और टेबिल टेनिस, समूहगान और अंत्याक्षरी की प्रतियोगिताए हुई। उच्च प्राथमिक स्तर में 200 मीटर बालक में देवरिया के शिवसागर चौहान 200 मीटर बालिका में गोरखपुर की अनामिका, 600 मीटर बालक में महराजगंज के अमरेश, प्राथमिक में 200 मीटर बालिका में कुशीनगर की अन्तिमा, 200 मीटर बालक में महराजगंज के अरविंद ने प्रथम स्थान हासिल किया। खो खो बालक में गोरखपुर की टीम विजयी और कुशीनगर की टीम उपविजेता रही। वही खो खो बालिका में देवरिया विजेता और गोरखपुर की टीम उपविजेता रही। कबड्डी बालक में महराजगंज विजयी और देवरिया उपविजेता, कबड्डी बालिका में देवरिया विजेता और गोरखपुर उपविजेता रही। लंबी कूद बालक में महराजगंज के अभिलेश, लंबी कूद बालिका में कुशीनगर की शालिनी, शॉट पुट बालक में गोरखपुर के आलोक, शॉट पुट बालिका में गोरखपुर की निक्की, टेबिल टेनिस बालक में गोरखपुर के अंश, टेबल टेनिस बालिका में गोरखपुर

की अंशु ने प्रथम स्थान हासिल किया। कुश्ती बालक के 25 किलोग्राम वर्ग में गोरखपुर के पवन, 30–35 में कुशीनगर के जाहिद, 35–40 में गोरखपुर के रमेश, 40–45 में कुशीनगर के प्रिंस, 45 के गोरखपुर के यशवीर ने प्रथम स्थान हासिल किया। वही कुश्ती बालिका में 25 किलोग्राम वर्ग में गोरखपुर की शिवांगी, 30–35 में देवरिया की काजल, 35–40 में कुशीनगर की प्रतिमा, 40–45 में कुशीनगर की अनोखी, 45 में गोरखपुर की अनुष्का ने प्रथम स्थान हासिल किया। हाकी बालक में देवरिया विजेता और कुशीनगर उपविजेता रहा। हाकी बालिका में कुशीनगर विजेता और गोरखपुर उपविजेता रहा। क्रिकेट बालक में महराजगंज की टीम विजेता और देवरिया उप– विजेता। इस अवसर पर रीना सिंह, अकरम परवेश, श्रवण कुमार यादव, प्रेम नारायण गुप्ता, ज्ञानेश्वर लाल, देवेंद्र , नीलेश श्रीवास्तव, प्रेमलता सिंह, प्रीति पाल, ऋचा पांडे, गरिमा सिंह, मो. खालिद, निहारिका सिंह, महेंद्र चतुर्वेदी, डॉ विनय मल्ल, हर्ष श्रीवास्तव, अमरेंद्र शाही, अनूप सिंह, नरेंद्र राय, रितेश सिंह, पंकज सिंह, ममता शेखर, भरोहिया ब्लॉक की रंगोली टीम, मंजूषा सिंह, अखिलेश सिंह, आशुतोष सिंह, विनय सिंह, मनोज गुप्त आदि मौजूद रहे। उक्त सूचना रीना सिंह जिला व्यायाम शिक्षिका द्वारा दी गई है। पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरण समारोह कल दोपहर 1 बजे से आयोजित समापन समारोह में रीजनल स्पोर्ट्स स्टेडियम के प्रागंण में होंगे।

गाजे बाजे के साथ निकली कलश यात्रा

पिपरौली गोरखपुर । क्षेत्र के मल्हीपुर–उसका गांव में आज से शुरू हो रहे श्रीमद् भागवत कथा के तहत एक भव्य कलश यात्रा निकाली गई। जिसमें सैकड़ो की संख्या में भक्त गाजे बाजे के साथ मल्हीपुर गांव से कलश यात्रा निकाले जो कालेसर राप्ती नदी के तट से जल भरकर वापस मल्हीपुर गांव तक पहुंची। जिसमें प्रतिदिन शाम को आचार्य संतोष शुक्ला जी महाराज द्वारा श्रीमद भागवत कथा कही जाएगी तथा

21 नवंबर को भंडारे के साथ इसका विधिवत समापन किया जाएगा। इस अवसर पर जजमान मनोरमा मिश्रा, हृदय नारायण मिश्रा, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि उमेश पांडेय, पेड़ा सिंह, अंजू देवी, सत्य प्रकाश तिवारी, अभय तिवारी, गिरीश त्रिपाठी, रामविलास त्रिपाठी, गंगा सिंह, प्रमोद शुक्ला, अवनीश मिश्रा, मृत्युंजय सिंह, बबलू सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

टयुवेल से पानी न मिलने पर किसानों ने किया प्रदर्शन

पिपरौली गोरखपुर । क्षेत्र के अमटौरा गांव के सरकारी नलकूप (टयुवेल) के स्टार्टर जल जाने की वजह से पानी न मिलने की वजह से नाराज किसानों ने किया प्रदर्शन। प्रदर्शनकारी किसानों का नेतृत्व कर रहे रजनीश सिंह ने बताया कि विगत एक हफ्ता पहले सरकारी नलकूप का स्टार्टर जल चुका था ।जिससे किसानों को पानी नहीं मिल पा रहा था। रवि की फसल की बुवाई का समय चल रहा है ।किसानों को पानी की अति आवश्यकता है जिससे वह खेतों की सिंचाई इत्यादि कर सकें। नया स्टार्टर लगाया गया

पर वह 24 घंटा भी नहीं चला कि वह भी जल गया जिससे किसानों को काफी समस्या हो रही है। पानी नहीं मिल रहा है ।अतः हम लोगों की मांग है कि जल्द से जल्द नया स्टार्टर लगाया जाए। जिससे किसानों को पानी मिल सके। इस अवसर पर सुनीता देवी, शांति देवी, राजेंद्र, मीरा, अविनाश निषाद ,राहुल, रामरती, नीरज, प्रमोद, कमलावती, वीरेंद्र, जय सिंह इत्यादि सहित अन्य लोग उपस्थित रहे ।इस संबंध में जे ई संजय सिंह ने कहा कि जल्द ही स्टार्टर बनवा दिया जाएगा जिससे किसानों को पानी मिल सके।

हनुमान मंदिर के लिए विधायक ने किया भूमि पूजन

पिपरौली गोरखपुर । क्षेत्र के मल्हीपुर गांव में ग्राम वासियों के सहयोग से निर्मित होने वाले हनुमान मंदिर का भूमि पूजन सहजनवां के भाजपा विधायक प्रदीप शुक्ला और ब्लॉक प्रमुख दिलीप कुमार यादव द्वारा किया गया। इस अवसर पर ग्राम प्रधान प्रतिनिधि मल्हीपुर–उसका उमेश पांडेय ने कहा कि समस्त ग्राम वासियों के सहयोग से हनुमान जी के मंदिर का निर्माण किया जा रहा है। जिसमें सभी ने कुछ ना कुछ आंशिक योगदान दिया है। सबके सहयोग से बनने वाली हनुमान मंदिर का निर्माण जल्द ही कर दिया जाएगा। इस अवसर पर पिपरौली ब्लाक प्रधान संघ अध्यक्ष मनीष पांडेय, चंद्रभूषण पांडेय, श्रीराम शर्मा उर्फ मोनू शर्मा, पेड़ा सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

श्रीमद् भागवत कथा के दूसरे दिन ध्रुव चरित्र का हुआ वर्णन। श्रोता हुए भावविभोर।

धनपतगंज सुल्तानपुर। बेटियां घर की लक्ष्मी होती है उन्हें भार नहीं मानना चाहिए।समाज में समर्पण का भाव सिर्फ बेटियों में ही मिलता है। उक्त बातें बड़नपुर ग्राम पंचायत के ग्राम पूरे पंडित आचार्य ब्लॉक धनपतगंज सुल्तानपुर में चल रही श्रीमद् भागवत कथा में दूसरे दिवस पर पूज्य बाल व्यास मधुर जी महराज ने बताया। वृंदावन धाम से आए हुए बाल व्यास महराज ने कथा में आगे ध्रुव चरित्र के अंतर्गत बताया कि जीवन में कितना भी संघर्ष मिले पर अपने कर्तव्य पथ को छोड़ना नहीं चाहिए। अपने कर्तव्य के प्रति दृढ़ निश्चय रखना चाहिए और यही दृढ़ निश्चय ही मनुष्य को एक दिन सफलता अवश्य प्राप्त कराता है। उन्होंने आगे बताया कि अपने गुरु के प्रति हमेशा विश्वास रखना चाहिए। इस पृथ्वी पर विषम परिस्थितियों में भी कोई साथ दे न दे लेकिन एक गुरु अवश्य अपने शिष्य के प्रति अपने कर्तव्य को निभाते हैं। इसलिए गुरु के वचनों के प्रति तथा उनके आचरण के प्रति हमेशा विश्वास करना चाहिए। ध्रुव जी महाराज की कठोर तपस्या का ही फल है कि आज भी

वह संसार में ध्रुव तारे के रूप में चमक रहे हैं। विवाह संयोग में भी ध्रुवावलोकन का नियम होता है। ध्रुव से तात्पर्य अटल से है। अगर ध्रुव जैसी ऊंचाई पर जाना है तो जीव को ध्रुव जैसी तपस्या भागवत निष्ठा और गुरु के प्रति विश्वास होना अति आवश्यक है ।जीवन में वही मनुष्य सुखी है जो भगवत भजन में लीन है। मनुष्य को सबसे सौभाग्यशाली माना जाता है क्योंकि वह संसार में रहकर भागवत कथा के श्रवण का सुख प्राप्त करता है। कथा ज्ञान यज्ञ सप्ताह के दूसरे दिवस पर मुख्य यजमान पूर्व प्राचार्य पंडित जगदेव प्रसाद पाण्डेय शास्त्री के पुत्र संतोष पाण्डेय पत्रकार ने कथा श्रवण में आए हुए समस्त श्रद्धालुओं को धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर पूर्व मंत्री जय नारायण तिवारी, मनोज मिश्र,कालिका तिवारी सुधीर पांडेय राजू तिवारी श्री निवास शुक्ला अयोध्या मिश्रा साहेब बक्श सिंह रामशंकर तिवारी डॉक्टर अमन वर्मा ,मोनू पांडेय,शिवानंद शुक्ला चंद्र भूषण शुक्ला रवि पांडेय राम सुख तिवारी (पूर्व सूबेदार)अशोक पांडे,जुगेश्वर नाथ पांडेय अंकित पांडेय सहित सैंकड़ों कथा भक्त उपस्थित रहे।

धर्मेन्द्र सिंह बने पीपीगंज थाने के नये प्रभारी निरीक्षक

पीपीगंज गोरखपुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गोरखपुर ने पुलिस व्यवस्था को सुदृढ़ करने के सात पुलिस अधिकारियों के कार्यक्षेत्र में परिवर्तन कर नयी तैनाती किया है।

पीपीगंज थानाध्यक्ष उपनिरीक्षक अरविन्द सिंह को गैर जनपद स्थानान्तरण हेतु पुलिस लाइन भेजा। और निरीक्षक धर्मेन्द्र सिंह को पुलिस लाइन से पीपीगंज थाने का प्रभारी निरीक्षक नियुक्त किया है।

एसडीएम ने किया पीएचसी कौड़ीराम का औचक निरीक्षण

कौड़ीराम गोरखपुर । उप जिलाधिकारी बांसगांव केसरी नंदन तिवारी ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र कौड़ीराम

का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने औषधि कक्ष , ई0टी0सी0 एवं लैब का निरीक्षण किया। एसडीएम ने अपना ब्लड जाँच भी कराया। अस्पताल परिसर का निरीक्षण किया एवं प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ0 संतोष कुमार वर्मा एवं कर्मचारियों की सराहना किया। कोरोना काल में किये गए ऐतिहासिक कार्यों एवं उपलब्धियों के लिए डॉ0 संतोष कुमार वर्मा एवं डॉ0 विनय श्रीवास्तव को बधाई भी दिया। इस अवसर पर डॉ0 सीमा राय, डॉ0 जय प्रकाश, डॉ0 किरन वर्मा, डॉ0 मनोज सिंह, डॉ0 विनय श्रीवास्तव, बृजेश कुमार मद्धेशिया, रवि प्रकाश राय, कपिल देव, रजनीश तिवारी, उमेश कुमार वर्मा, विनोद कुमार, पूजा, चमन कुमार, संतोष कुमार सिंह, अरबाज अहमद, इलियास, असलम, शिवेंद्र मिश्रा, अरुण कुमार गुप्ता, शैलेश कुमार, संतोष कुमार पिंटू आदि उपस्थित रहे।

कम्पोजिट पूर्व माध्यमिक विद्यालय घघसरा में अभिभावक – शिक्षक बैठक का आयोजन

घघसरा गोरखपुर । कम्पोजिट पूर्व माध्यमिक विद्यालय घघसरा में एक महत्वपूर्ण अभिभावक–शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक का उद्देश्य विद्यालय और अभिभावकों के बीच संवाद स्थापित करना और विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति तथा स्वास्थ्य सम्बंधी मुद्दों पर चर्चा करना था। बैठक की शुरुआत में विद्यालय के इंचार्ज प्रधानाध्यापक जनार्दन धर दुबे ने सभी उपस्थित अभिभावकों और शिक्षकों का स्वागत किया और बैठक के एजेंडे की जानकारी दी। बैठक में चर्चा का मुख्य विषय था नैट परीक्षा। इस पर चर्चा करते हुए प्रधानाध्यापक ने अभिभावकों को बताया कि इस परीक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर का मूल्यांकन करना है और यह उनके भविष्य की शैक्षिक दिशा निर्धारित करने में मदद करता है। उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि वे अपने बच्चों को इस परीक्षा के लिए अच्छी तरह से तैयार करने में सहयोग करें। बैठक के दौरान, विद्यालय के सभी शिक्षक गण और शिक्षा मित्र गीता दुबे, हेमलता दुबे, अभिभावक उर्मिला, किरन सहित अन्य लोग भी उपस्थित थे।

गहराता जा रहा है अजीत सिंह की हत्या का रहस्य

अजीत सिंह उर्फ जड़ी की हत्या का रहस्य पुलिस के लिए पहेली बनता जा रहा है। अगर दोनों शूटरों की बिहार में गिरफ्तारी उनके प्लान का हिस्सा है तो इस हत्याकांड में कोई बड़ा खिलाड़ी भी पर्दे के पीछे हो सकता है जो सुनियोजित तरीके से इस हत्याकांड को अंजाम देने के साथ ही हत्यारों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस को मैनेज करने की भी क्षमता रखता हो। 10 दिन तक ये शूटर कहां छिपे रहे, उन्हें शराब कहां से मिली और गिरफ्तारी कैसे हुई इसकी बारीकी से जांच की आवश्यकता दिखाई दे रही है। हालांकि यह दो प्रान्त से संबंधित मामला बन चुका है तो पुलिस की जांच कहां तक पहुंचती है देखने योग्य होगा।

बांसगांव संदेश ने पत्रकारों के साथ की बैठक, पारदर्शिता और निष्पक्षता पर जोर

बांसगांव गोरखपुर । गोरखपुर जिले के प्रतिष्ठित समाचार पत्र बांसगांव संदेश ने पत्रकारिता में पारदर्शिता और ईमानदारी के महत्व पर जोर देने के लिए बुधवार शाम एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की। इस बैठक का नेतृत्व बांसगांव संदेश के संपादक नीतीश जी ने किया, जिसमें संस्था के सभी प्रमुख पत्रकार जैसे सुनील, सुशील सिंह, सोनू सिंह, राज कुमार, मोहम्मद फैसल और अन्य पत्रकार बंधु शामिल हुए। बैठक का उद्देश्य पत्रकारिता में बढ़ती चुनौतियों के बीच सच्चाई और निष्पक्षता को बनाए रखना था। संपादक नीतीश जी ने कहा कि आज के डिजिटल युग में पत्रकारों के लिए पारदर्शिता का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। उन्होंने पत्रकारों से समाज को सही और निष्पक्ष जानकारी देने के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि एक सच्चे पत्रकार का कर्तव्य समाज को जागरूक करना और ईमानदारी से अपनी भूमिका निभाना है। नीतीश जी ने कहा कि पत्रकारिता में टीमवर्क और एकजुटता ही मीडिया संस्थान की सफलता का आधार होती है। उन्होंने बांसगांव संदेश के सभी पत्रकारों से अपने कार्यों में निष्पक्षता और समाज के प्रति जिम्मेदारी का पालन करने का आह्वान किया। इसके साथ ही, उन्होंने सभी पत्रकारों से संस्थान की आगामी डिजिटल उपस्थिति को मजबूत बनाने का अनुरोध किया, ताकि अधिक से अधिक लोग विश्वसनीय जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकें। बैठक में सभी पत्रकारों ने निष्पक्ष और निष्कलंक पत्रकारिता का संकल्प लिया। बांसगांव संदेश के संपादक ने पत्रकारों को व्यक्तिगत विचारों को अलग रखते हुए रिपोर्टिंग में संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की सलाह दी। इस बैठक के माध्यम से संस्थान ने अपने पत्रकारों को नई ऊर्जा और दृष्टिकोण से लैस किया, ताकि वे समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में काम कर सकें।

शिव विवाह देखकर हर्षित हुए श्रोता

घघसरा गोरखपुर । भगवान शिव और माता पार्वती के अद्भुत और दिव्य मिलन की कथा हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह कथा न केवल प्रेम, भक्ति और त्याग का प्रतीक है, बल्कि शिव और पार्वती के बीच की अडिग प्रेम और समर्पण की भावना को भी उजागर करती है। उक्त बातें ग्राम पंचायत पुण्डा में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा के दौरान पंडित सत्यब्रत उपाध्याय चंदन बाबा ने बताया। उन्होंने कहा कि माता पार्वती का जन्म हिमालय और उनकी पत्नी मेनका से हुआ था। एक समय की बात है, जब ब्रह्मा और शिव ने मिलकर संसार की रचना की, तब भगवान शिव ने तपस्या के लिए हिमालय पर्वत पर एकान्त वास किया। इसी दौरान पार्वती का जन्म हुआ। वह बचपन से ही भगवान शिव के प्रति विशेष आस्था और प्रेम रखती थीं ।एक समय माता पार्वती

ने यह निर्णय लिया कि वह भगवान शिव के साथ विवाह करेंगी। इसके लिए उन्होंने कठोर तपस्या की, जिससे भगवान शिव को प्रसन्न किया। पार्वती ने 1008 दिनों तक बिना किसी विश्राम के तपस्या की। उनके कठिन तप के कारण देवता और ऋषि भी प्रभावित हो गए, और उन्होंने भगवान शिव से पार्वती के तप को स्वीकार करने की प्रार्थना की ।भगवान शिव का अस्वीकृति और पार्वती की तपस्या भगवान शिव, जो कि निराकार और अज्ञेय रूप में होते हैं, पार्वती के प्रेम से अनजान थे। उन्होंने कई बार पार्वती को अपने योग्य न मानते हुए विवाह के लिए अस्वीकार कर दिया। इसके बावजूद, पार्वती ने अपना तप जारी रखा। वह अपनी तपस्या में इतनी लीन हो गईं कि उन्होंने भोजन और जल का त्याग कर दिया। उनकी भक्ति और तपस्या को देखकर भगवान शिव ने अंततः उन्हें दर्शन दिए और स्वीकार किया कि वह पार्वती के बिना शादी नहीं करेंगे। जब पार्वती की तपस्या सफल हो गई, तो भगवान शिव ने उन्हें दर्शन दिए और पार्वती के भव्य रूप को देखकर वह हर्षित हुए। इस अवसर पर लालजी भट्ट, अनिल भट्ट, आनन्द भट्ट, श्यामानंद भट्ट, भवानी भट्ट, नवीन भट्ट, विनय भट्ट, विकास भट्ट, चुनमुन भट्ट, अनुपम, रंजीत आदि लोग मौजूद रहे।

कम्पोजिट पूर्व माध्यमिक विद्यालय घघसरा में अभिभावक – शिक्षक बैठक का आयोजन

घघसरा गोरखपुर । कम्पोजिट पूर्व माध्यमिक विद्यालय घघसरा में एक महत्वपूर्ण अभिभावक–शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक का उद्देश्य विद्यालय और अभिभावकों के बीच संवाद स्थापित करना और विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति तथा स्वास्थ्य सम्बंधी मुद्दों पर चर्चा करना था। बैठक की शुरुआत में विद्यालय के इंचार्ज प्रधानाध्यापक जनार्दन धर दुबे ने सभी उपस्थित अभिभावकों और शिक्षकों का स्वागत किया और बैठक के एजेंडे की जानकारी दी। बैठक में

चर्चा का मुख्य विषय था नैट परीक्षा। इस पर चर्चा करते हुए प्रधानाध्यापक ने अभिभावकों को बताया कि इस परीक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर का मूल्यांकन करना है और यह उनके भविष्य की शैक्षिक दिशा निर्धारित करने में मदद करता है। उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि वे अपने बच्चों को इस परीक्षा के लिए अच्छी तरह से तैयार करने में सहयोग करें। बैठक के दौरान, विद्यालय के सभी शिक्षक गण और शिक्षा मित्र गीता दुबे, हेमलता दुबे, अभिभावक उर्मिला, किरन सहित अन्य लोग भी उपस्थित थे।

सम्पादकीय...

भारत की विमान निर्माण के क्षेत्र में कदम सबसे बड़ी चुनौती

भारत ने जब विमान निर्माण के क्षेत्र में ऊंची महत्त्वाकांक्षा रखते हुए अब कदम रखा है, तो क्वालिटी और किफायत के पहलू उसके आगे सबसे बड़ी चुनौती हैं। बेशक, टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्पलेक्स में मौजूद प्रबंधक इस चुनौती से वाकिफ होंगे।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और स्पेन के प्रधानमंत्री पेद्रो सांचेज ने गुजरात के वडोदरा में अति–महत्त्वाकांक्षी विमान परियोजना का उद्घाटन किया है। इसके तहत प्रतिस्पर्धी कीमत पर विमान या उसके पाट–पुर्जे बना कर अंतरराष्ट्रीय बाजार में उतारना संभव हुआ, तो वह सचमुच एक बड़ी उपलब्धि होगी। टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्प्लेक्स्य नाम से निर्मित इस परियोजना के तहत यूरोप की मशहूर विमान निर्माता कंपनी एयरबस और भारत के टाटा ग्रुप ने साझा उद्यम लगाया है। जाहिर है, इसमें तकनीक और विशेषज्ञता एयरबस लगाएगी, जबकि टाटा समूह स्थानीय ढांचे तथा कुशल कर्मियों का योगदान करेगा। बताया गया है कि यहां सी–295 सैन्य यातायात विमानों का उत्पादन होगा। 2021 में एयरबस डिफेंस और स्पैनिश कंपनी इस्पेस एसएच के साथ 56 सी–295 विमानों की सप्लाई के लिए 21,935 करोड़ रुपयों के समझौते पर भारत की ओर से हस्ताक्षर किए गए थे।सूचनाओं के मुताबिक यहां आरंभिक 16 विमान तो स्पेन से मंगवाए जाएंगे, लेकिन उसके बाद 40 विमानों का यहीं पर उत्पादन होगा। विमानों की असेंबली, परीक्षण, डिलीवरी और मेंटेनेंस भी यहीं पर होगी। सांचेज ने एलान किया कि इस परिसर में पहला विमान 2026 में बन कर तैयार होगा। एयरबस यूरोपीय बहुराष्ट्रीय कंपनी है, जिसका मुख्यालय फ्रांस में है। लेकिन इसमें अनेक यूरोपीय देशों के कारोबारियों का निवेश है। स्पेन उसका एक बड़ा उत्पादन स्थल है, हालांकि उसके पाट–पुर्जे यूरोप के कई देशों में तैयार होते हैं। अमेरिका की बोइंग और यूरोप की एयरबस– अब तक दुनिया में ये ही दो बड़ी विमान उत्पादक कंपनियां रही हैं। बोइंग के संकटग्रस्त होने के बाद एयरबस ने अपने कारोबार में बड़े उछाल की आस जोड़ी है। हालांकि इस बीच चीन भी विमान निर्माण के बाजार में उतर चुका है। अपने घरेलू बाजार के अलावा इस सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी को कई देशों से ऑर्डर मिल चुके हैं। जैसा कि आम चलन है, चीनी उत्पाद किफायती पड़ते हैं और इसलिए बाजार में छा जाते हैं। भारत ने जब विमान निर्माण के क्षेत्र में ऊंची महत्त्वाकांक्षा रखते हुए अब कदम रखा है, तो यह पहलू उसके आगे सबसे बड़ी चुनौती है। बेशक, टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्पलेक्स में मौजूद प्रबंधक भी इस चुनौती से वाकिफ होंगे।

अब बंटने और कटने का ख्याल है

तब अच्छे दिनों का ख्याल था। अब बंटने और कटने का ख्याल है। तब भारत में मध्यम वर्ग मजबूत था अब जर्जर और घटता हुआ है। तब दुनिया में उभरी हिंदू राजनीति पर कौतुक था, सम्मान और अभिनंदन था। कनाडा में मोदी के अभिनंदन का भारतीय महाकुंभ था। अब उसी कनाडा में हिंदू पीटते हुए हैं। तब वहां संसद में भी दिवाली थी, हिंदू मंदिरों में दीये थे अब हिंसा है। तब अमेरिका, ओबामा हिंदू राजनीति और मोदी को गले लगाते हुए थे अब उसी अमेरिका में दक्षिण एशियाई (भारत मूल के लोग अधिक) लोगों के खिलाफ हेटस्पीच (10 अक्टूबर 2024 की रायटर एजेंसी की विस्तृत रिपोर्ट) के नए रिकॉर्ड हैं। हिंदुओं के प्रति पक्षपात है। कमला हैरिस, निकी हेली, विवेक रामस्वामी आदि भारतीय मूल के नेताओं ने भी हिंदू और हिंदू वोटों से कन्नी काटी हुई है तो अमेरिकी संसद में दाखिल प्रस्ताव 1131 का भी फॉलोअप नहीं है। यह प्रस्ताव भारतीय मूल के सांसद थानेदार ने हिंदूफोबिया के खिलाफ रखा था। इससे अमेरिका में हिंदू मंदिरों पर हमलों का जिक्र था।इतना ही नहीं जनवरी 2023 से अगस्त 2024 के मध्य में अमेरिका के ऑनलाइन स्पेस में एशियाई (मोटा मोटी हिंदुओं) के खिलाफ घृणा नैरेटिव की संख्या 23 हजार से बढ़ 46 हजार थी। अमेरिका के सबसे बड़े प्रदेश कैलिफोर्निया में यहूदियों के बाद नफरती अपराध हिंदुओं के खिलाफ सर्वाधिक थे। इस्लामोफोबिया तीसरे नंबर पर था।

कहीं सियासी रूप तो नहीं लेता जा रहा है प्रयागराज का छात्र आंदोलन

अभ्यर्थियों ने नॉर्मलाइजेशन के खिलाफ आयोग पर तंज कसते हुए पोस्टर के जरिये पदों की रेट लिस्ट भी जारी की। मंगलवार सुबह पुलिस कमिश्नर तरुण गाबा अभ्यर्थियों के बीच पहुंचे थे और उन्होंने अभ्यर्थियों से कहा था कि वह भी कभी प्रतियोगी छात्र रहे हैं।लोक सेवा आयोग उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित की जा रही पीसीएस व आरओध्एआरओ प्रारंभिक परीक्षा में मानकीकरण (नॉर्मलाइजेशन) को लेकर छात्र जो आंदोलन कर रहे हैं,वह कहीं राजनैतिक रूप तो नहीं लेता जा रहा है। विपक्ष छात्रों के गुस्से को योगी सरकार के खिलाफ सियासी हथियार तो नहीं बना रहा है। ऐसा इस लिये लग रहा है क्योंकि छात्रों की जो मांगे हैं वह तर्कसंगत कम जिद्द वाली ज्यादा हैं। इतना ही नहीं छात्रों के प्रदर्शन में वह ताकतें भी नजर आ रही है जो किसी तरह से छात्र–छात्राएं नजर नहीं आ रहे हैं। विपक्ष भले योगी सरकार के खिलाफ इसको सियासी मोहरा बना रहा हो, लेकिन इस आंदोलन को लेकर शिक्षाविदों की राय अलग है।कई शिक्षाविदों और विषय विशेषज्ञों का कहना है कि किसी भी तरह के विरोध में से पहले छात्रों को प्रक्रिया को समझना जरूरी है। विरोध में सीधे सड़क पर उतर आना ठीक नहीं है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शिक्षक रहे प्रो. योगेश्वर तिवारी का कहना है कि आंदोलित छात्रों को मानकीकरण की प्रक्रिया की वास्तविक स्थिति की जानकारी लेने के उपरांत ही कोई निर्णय लेना चाहिए। शिक्षाविद और काउंसलर डॉ. अपूर्वा भार्गव का कहना है कि मानकीकरण की प्रक्रिया का विरोध अगर इस आधार पर किया जा रहा है कि सरल और कठिन प्रश्नों के पूछे जाने से समान लाभ सबको नहीं मिलेगा तो यह उचित नहीं है। प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में गुणात्मक सुधार की आवश्यकता हमेशा से रही है, ताकि इस सेवा के योग्य अभ्यर्थियों को इसमें स्थान मिल सके। मानकीकरण की प्रक्रिया भी इसी परीक्षा में गुणात्मक सुधार का एक प्रयास है। पहले से कई राज्यों में यह प्रणाली अमल में लाई जा रही है, इस आधार पर भी इसे लागू करने का विरोध समझ से परे है।उधर, आयोग के बाहर चल रहे प्रदर्शन के दौरान सरकारी बैरियर व कोचिंग का बोर्ड तोड़ने पर 12

लोगों पर एफआईआर दर्ज की गई है। इनमें से दो नामजद अभिषेक शुक्ला और राघवेन्द्र व अन्य अज्ञात आरोपी हैं। उधर, माहौल बिगाड़ने की कोशिश करने पर 10 को हिरासत में लिया गया है, जिनसे देर रात तक पूछताछ जारी है। जबकि आज तीसरे दिन भी उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में अभ्यर्थियों का उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग कार्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन जारी है। वे मांग कर रहे हैं कि पीसीएस और आरओध्एआरओ परीक्षाएं एक दिन और एक शिफ्ट में आयोजित की जाएं।इससे पहले, प्रयागराज में धरना स्थल पर मंगलवार को ड्रम और नगाड़ों के शोर में यह नारा गूंजता रहा– जुड़ेंगे और जीतेंगे भी। अभ्यर्थियों ने नॉर्मलाइजेशन के खिलाफ आयोग पर तंज कसते हुए पोस्टर के जरिये पदों की रेट लिस्ट भी जारी की। मंगलवार सुबह पुलिस कमिश्नर तरुण गाबा अभ्यर्थियों के बीच पहुंचे थे और उन्होंने अभ्यर्थियों से कहा था कि वह भी कभी प्रतियोगी छात्र रहे हैं। नियम कानून से ऊपर कोई नहीं। उन्होंने अभ्यर्थियों को सलाह दी कि आयोग के सामने से उठें और उनके साथ सिविल लाइंस स्थित धरना स्थल पर चलें, क्योंकि इससे रास्ता बंद हो गया है और आम लोगों को दिक्कत तो रही है,लेकिन छात्र अपनी जिद्द पर अड़े हुए हैं।

गंगा का मैल सख्ती व जवाबदेही से ही दूर होगा

कुंभ मेले की तैयारियां अंतिम चरण में हैं और अखाड़ों की सक्रियता बढ़ गई है। महाकुंभ को लेकर देश ही नहीं विदेश में भी खूब चर्चा होती है। यदि गंगाजल की गुणवत्ता को लेकर ऐसे ही सवाल उठते रहे तो देश–दुनिया में अच्छा संदेश नहीं जाएगा। गंगा की सफाई, उसे प्रदूषण मुक्त करने एवं नदियों के माध्यम से आर्थिक विकास, धार्मिक आस्था एवं पर्यटन की संभावनाओं को तलाशने की दृष्टि से वर्तमान उत्तरप्रदेश सरकार एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तमाम प्रयासों के बावजूद गंगा आज भी मैली क्यों है? यह सवाल सरकार के नदियों को स्वच्छ बनाने के लिए लंबे समय से चल रही तमाम योजनाओं और कार्यक्रमों की पोल खोलते हैं। सरकार की ओर से घोषणाएं करने में शायद ही कभी कमी की जाती है, मगर उन पर अमल को लेकर कहां चूक या लापरवाही बरती जा रही है, इस पर गौर करना कभी जरूरी नहीं समझा जाता। यह गौर करना राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण की उस टिप्पणी के कारण भी जरूरी हो गया है, जिसमें कहा गया है कि प्रयागराज में गंगा का पानी इतना प्रदूषित हो गया है कि वह आचमन करने लायक भी नहीं रह गया है। एनजीटी का यह खुलासा इसलिये भी चिंता बढ़ाने वाला है क्योंकि कुछ ही माह बाद यानी जनवरी 2025 की पौष पूर्णिमा से प्रयागराज में महाकुंभ की शुरुआत होने वाली है। कुंभ मेले की तैयारियां अंतिम चरण में हैं और अखाड़ों की सक्रियता बढ़ गई है। महाकुंभ को लेकर देश ही नहीं विदेश में भी खूब चर्चा होती है। यदि गंगाजल की गुणवत्ता को लेकर ऐसे ही सवाल उठते रहे तो देश–दुनिया में अच्छा संदेश नहीं जाएगा। सवाल इस बात को लेकर भी उठेंगे कि विभिन्न सरकारों द्वारा शुरू की गई अनेक महत्वाकांक्षी व भारी–भरकम योजनाओं के बावजूद गंगा को साफ करने में हम सफल क्यों नहीं हो पाए हैं। आखिर कौन है गंगा को प्रदूषित करने के गुनहगार? सरकारों को यह समझना होगा कि उसे केवल गंगा को साफ ही नहीं करना, बल्कि उसकी निर्मलता एवं अविरलता के लिये एक अनूठा उदाहरण भी पेश करना है। ऐसा करके ही देश की अन्य नदियों को भी प्रदूषणमुक्त करने की दिशा में सकारात्मक वातावरण निर्मित किया जा सकेगा। यह जानकारी भी सामने आई कि उत्तरकाशी में सुरंग के निर्माण के कारण ढेघ्र बने मलबे एवं कचरे को गंगा नदी के किनारे डाल दिया गया। औद्योगिक कारखानों का जहरीला कचरा ही नहीं बल्कि सरकार की अन्य विकास योजनाएं ही गंगा को प्रदूषित करने का जरिया बन रही है, जो अधिक शर्मनाक एवं चिन्ताजनक है। गंगा नदी एवं अन्य नदियों में उद्योगों से विभिन्न रसायन, चीनी मिल, भट्टी, ग्लिस्रिन, टिन, पेंट, साबुन, कताई, रेयान, सिल्क, सूत, प्लास्टिक थैलियां–बोतले आदि जहरीला कचरा बड़ी मात्रा में सरकार की चेतावनियों के बावजूद मिल रहा है। गंगा कायाकल्प का दृष्टिकोण 'अविरल धारा' (सतत प्रवाह), 'निर्मल धारा' (प्रदूषणरहित प्रवाह) को प्राप्त करके और भूगर्भीय और पारिस्थितिक अखंडता को सुनिश्चित करके नदी की अखंडता को बहाल करने की समग्र योजना और रखरखाव के बावजूद गंगा लगातार प्रदूषित हो रही है। जबकि सरकार क्रॉस–सेक्टोरल सहयोग को प्रोत्साहित करने वाली नदी बेसिन रणनीति को लागू करके गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने और पुनरोद्धार को सुनिश्चित करने की दिशा में काम कर रही है। यह पानी की गुणवत्ता और पारिस्थितिक रूप से जिम्मेदार विकास को बनाए रखने की दृष्टि से गंगा नदी में न्यूनतम जैविक प्रवाह भी सुनिश्चित करता है। वर्ष 2014 से गंगा की सफाई का महत्वाकांक्षी अभियान 'नमामि गंगे' में अब तक करीब चालीस हजार करोड़ की लागत से गंगा की सफाई की करीब साढ़े चार सौ से अधिक परियोजनाएं आरंभ भी की गई हैं। इस परियोजना के अंतर्गत गंगा के किनारे स्थित शहरों में सीवर व्यवस्था को दुरुस्त करने, उद्योगों द्वारा बहाये जा रहे अपशिष्ट पदार्थों के निस्तारण के लिये शोधन संयंत्र लगाने, गंगा तटों पर वृक्षारोपण, जैव विविधता को बचाने, गंगा घाटों की सफाई के लिये काफी काम तो हुआ लेकिन अपेक्षित परिणाम सामने नहीं आए हैं। जो हमें बताता है कि जब तक समाज में जागरूकता नहीं आएगी और नागरिक अपनी जिम्मेदारी का अहसास नहीं करेंगे, गंगा मैली ही रह जाएगी। अधिकारियों की लापरवाही या फिर गड़बड़ियों की वजह से किसी बड़ी और बेहद महत्वपूर्ण पहलकदमी का भी हासिल शून्य कैसे हो सकता है, इसका उदाहरण गंगा का प्रदूषण है। दरअसल, लगातार बढ़ती जनसंख्या का दबाव और गंगा तट पर स्थित शहरों में योजनाबद्ध ढंग से जल निकासी व सीवरेज व्यवस्था को अंजाम न दिये जाने से समस्या विकट हुई है। गंगा को साफ करने के लिये जरूरी है कि स्वच्छता अभियान एक निरंतर प्रक्रिया हो। एक बार की सफाई निष्प्रभावी हो जाएगी यदि हम प्रदूषण के कारकों को जड़ से समाप्त नहीं करते। इसके लिये गंगा के तट वाले राज्यों में पर्याप्त जलशोधन संयंत्र युद्ध स्तर पर लगाए जाने चाहिए। साथ ही गंगा सफाई अभियान की नियमित निगरानी होनी चाहिए। इसमें आधुनिक तकनीक का भी सहारा लिया जाना चाहिए। लोगों को बताया जाना चाहिए कि गंगा सिर्फ नदी नहीं है यह खाद्य शृंखला को संबल देने वाली तथा हमारी आध्यात्मिक यात्रा से भी जुड़ी है। गंगा में जहरीला कचरा बहाने वाले उद्योगों पर भी आर्थिक दंड लगाना चाहिए। इसी से यह उम्मीद की जा सकती है कि इसके जरिए मानव सभ्यता के लिए एक बेहद जरूरी नदी में फिर से जीवन भर सकेगा। वास्तव में गंगा एक संपूर्ण संस्कृति की वाहक रही है, जिसने विभिन्न साम्राज्यों का उत्थान–पतन देखा, किंतु गंगा का महत्व कम न हुआ। आधुनिक शोधों से यह भी प्रमाणित हो चुका है कि गंगा की तलहटी में ही उसके जल के अद्भुत और चमत्कारी होने के कारण मौजूद है। यद्यपि औद्योगिक विकास ने गंगा की गुणवत्ता को दूषित किया है, किन्तु उसका महत्व यथावत है।

फिल्मी दुनिया/सेहत

सिंघम अगेन के आधे बजट में बनी फिल्म अमरन, निकली बश्वक्स अश्वफिस की असली हीरो, चीते की रफ्तार से कर रही कमाई

सिंघम अगेन और भूल भुलैया 3 बॉक्स ऑफिस पर छाई हुई है। दोनों ही फिल्में तगड़ी कमाई कर रही हैं। दोनों ही फिल्में दिवाली वीकेंड पर रिलीज हुई थीं। अजय देवगन की सिंघम अगेन और कार्तिक आर्यन की भूल भुलैया 3 से ठीक एक दिन पहले ही साउथ की एक फिल्म रिलीज हुई। फिल्म का नाम अमरन है। 31 अक्टूबर को ये फिल्म सिनेमाघरों में रिलीज

हुई और तब से लगातार बॉक्स ऑफिस पर बंपर कमाई कर रही है। लोगों को लगा था कि फिल्म का प्रदर्शन इतना दमदार नहीं होगा, लेकिन फिल्म ने दूसरे ही हफ्ते में मुनाफा निकालना शुरू कर दिया है। इस फिल्म को दर्शकों का लगातार प्यार मिल रहा है और यही वजह है कि ये सिंघम अगेन और भूल भुलैया 3 से भी ज्यादा मुनाफा देने वाली फिल्म बनने वाली है।अमरन लगातार बॉक्स ऑफिस पर डंका बजा रही है। लोगों को लगा था कि दूसरे वीकेंड पर इसकी कमाई की रफ्तार धीमे

सिकंदर का मुकद्दर की रिलीज तारीख से उठा पर्दा, पहला पोस्टर आया सामने

अभिनेत्री तमन्ना भाटिया मौजूदा वक्त में अपनी आगामी फिल्म सिकंदर का मुकद्दर को लेकर सुर्खियां बटोर रही हैं।इस फिल्म में उनके साथ जिमी शेरगिल भी मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। अविनाश तिवारी भी इस फिल्म का अहस हिस्सा हैं।अजय देवगन और तब्बू की फिल्म औरों में कहां दम था का निर्देशन कर चुके नीरज पांडे ने सिकंदर का मुकद्दर के निर्देशन की कमान संभाली है।अब सिकंदर का मुकद्दर की रिलीज तारीख से पर्दा उठ गया है।सिकंदर का मुकद्दर सिनेमाघरों में नहीं, बल्कि ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज होने जा रही है। इस फिल्म को आप 29 नवंबर, 2024 से नेटफ्लिक्स पर देख सकते हैं।इसके साथ सिकंदर का मुकद्दर का पहला पोस्टर भी सामने आ चुका है, जिसमें तमन्ना, जिमी और अविनाश की तिकड़ी कमाल दिख रही है।नेटफ्लिक्स इंडिया ने पोस्टर साझा करते हुए कैप्शन में लिखा, तीन अरोपी, लेकिन कौन अप्राधि? केस जल्दी ही खुल जाएगा। स्पेशल 26, बेबी और एमएस धोनीरू द अनटोल्ड स्टोरी जैसी फिल्में बना चुके नीरज पांडे आखिरी बार अजय देवगन और तब्बू की औरों में कहां दम था में नजर आए थे। इस नई फिल्म की कहानी 60 करोड़ के हीरे की चोरी, उसकी तलाश और एक पुलिस इंस्पेक्टर की जिद

साइकिलिंग इंटरवल्स करने वाले इन 5 बातों का रखें खास ध्यान

साइकिलिंग इंटरवल्स एक बेहतरीन एक्सरसाइज है, जो हृदय स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।इसमें नियमित रूप से साइकिल चलाने से न केवल शरीर की चर्बी कम होती है, बल्कि हृदय और फेफड़ों की क्षमता भी बढ़ती है।साइकिलिंग इंटरवल्स यानी तेज और धीमी गति के बीच बदलाव करके साइकिल चलाना, हृदय स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होता है। यह आपके शरीर को फिट रखने में भी मदद करता है।वार्मअप करना है जरूरीसाइकिलिंग इंटरवल्स शुरू करने से पहले वार्मअप करना जरूरी होता है। इससे मांसपेशियों में रक्त संचार बढ़ता है और चोट लगने का खतरा कम हो जाता है।5–10 मिनट तक धीमी गति से साइकिल चलाएं ताकि शरीर तैयार हो सके। वार्मअप से शरीर की मांसपेशियां लचीली होती हैं।यह आपके शरीर को उच्च तीव्रता वाले अंतरालों के लिए तैयार करता है और आपको थकान से बचाता है। इस प्रकार वार्मअप आपके वर्कआउट का अहम हिस्सा होता है।उच्च तीव्रता वाले अंतराल से चलाएं साइकिलउच्च तीव्रता वाले अंतरालों में 1–2 मिनट तक तेज गति से साइकिल चलाना शामिल है। इस दौरान आपकी सांसें तेज हो जाती हैं और दिल की धड़कन बढ़ जाती है।यह आपके कार्डियोवैस्कुलर सिस्टम को मजबूत बनाता है और कैलोरी जलाने में मदद करता है। इस प्रकार के अंतराल से आपकी सहनशक्ति भी बढ़ती है और मांसपेशियों की ताकत में सुधार होता है।यह आपके शरीर को बेहतर तरीके से ऑक्सीजन पहुंचाने में मदद करता है।रिकवरी अंतराल को दें समयउच्च तीव्रता वाले अंतरालों के बाद रिकवरी अंतराल आता है, जिसमें आप धीमी गति से 2–3 मिनट तक साइकिल चलाते हैं।यह आपके दिल की धड़कन को सामान्य करने में मदद करता है और अगले उच्च तीव्रता वाले अंतराल के लिए आपको तैयार करता है।इस दौरान आपके शरीर को आराम मिलता है और मांसपेशियों में संचित लैक्टिक एसिड कम होता है। यह प्रक्रिया आपके शरीर को स्थिरता प्रदान करती है और आपको थकान से बचाती है।समय निर्धारित करना भी है महत्वपूर्णसंपूर्ण वर्कआउट का समय लगभग 20–30 मिनट होना चाहिए, जिसमें वार्मअप, उच्च तीव्रता वाले अंतराल, रिकवरी अंतराल और कूल डाउन शामिल हों।वार्मअप से मांसपेशियां तैयार होती हैं, उच्च तीव्रता वाले अंतराल से सहनशक्ति बढ़ती है और रिकवरी अंतराल से शरीर को आराम मिलता है।कूल डाउन से मांसपेशियों को आराम मिलता है और दिल की धड़कन सामान्य होती है। इस तरह आपका शरीर थकान महसूस नहीं करेगा और आप लंबे समय तक इस रूटीन को फॉलो कर सकेंगे।कूल डाउन जरूर होवर्कआउट खत्म करने के बाद कूल डाउन करना भी उतना ही जरूरी होता है, जितना कि वार्मअप करना।5–10 मिनट तक धीमी गति से साइकिल चलाएं ताकि आपकी मांसपेशियां आराम कर सकें और

अपराध पर अंकुश लगाने के साथ पीड़ितों को न्याय दिलाने में मेरी होगी पहली प्राथमिकता

गोला गोरखपुर। जनपद के दक्षिणाचल में स्थित कोतवाली गोला पर नवागत कोतवाल वेद प्रकाश शर्मा ने बुधवार की देर शाम पहुच कर विधिवत कार्यभार ग्रहण कर लिया। श्री शर्मा मूल रूप से बगल के जनपद सिद्धार्थ नगर के निवासी है और प्रयागराज विश्वविद्यालय से परास्नातक है। 2012 बैच के है।इसके पूर्व देवरिया में सदर कोतवाल रहने के बाद स्थानांतरण गोरखपुर जनपद के लिए हुआ। जिला पुलिस मुखिया डॉ गौरव ग्रोवर ने

गोला कोतवाली पर तैनात इंस्पेक्टर मधुप नाथ मिश्रा का पदोन्नति होकर डिप्टी एस पी बनने के बाद उनकी जगह पर पुलिस लाइन से प्रतिक्षरत रहे वेद प्रकाश शर्मा को गोला कोतवाली का कार्यभार सौप दिया है। नवागत कोतवाल के सामने गोला क्षेत्र में शांति व्यवस्था के साथ पीड़ितों को समुचित न्याय दिलाना एक चुनौती के रूप में होगा। नवागत कोतवाल के पद ग्रहण करते हुए क्षेत्र में चर्चा चल पड़ा है कि उनका सम्बन्ध भी गोला कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में है। बताते चले कि बीते आठ माह से मधुपनाथ मिश्रा कोतवाल गोला के रूप में तैनात थे। उनके कार्यकलाप को क्षेत्र के लोगो ने बखूबी देखा। क्षेत्र में लगभग शान्तिव्यवस्था पूर्ण रूप से कायम रही। नवागत कोतवाल के विषय मे सूत्रों से ज्ञात हुआ कि कानून व्यवस्था क्षेत्र में कायम रखने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगे। लेकिन कितना सफलता प्राप्त होगा यह भविष्य के गर्त में छुपा पड़ा है।

प्राथमिक विद्यालय बांसपार मे इसरो अंतरिक्ष एवं स्टेम प्रयोगशाला में व्यावहारिक प्रशिक्षण शुरू

व्योमिका स्पेस अकादमी द्वारा जिले की पहली प्रयोगशाला कौड़ीराम विकास खंड में

कौड़ीराम गोरखपुर । कौड़ीराम ब्लॉक के प्राथमिक विद्यालय बासपार में व्योमिका स्पेस अकादमी द्वारा स्थापित जिले की पहली इसरो अंतरिक्ष एवं स्टेम प्रयोगशाला में व्यवहारिक प्रशिक्षण मंगलवार को शुरू हुआ। व्योमिका स्पेस अकादमी के सीईओ गोविंद यादव के देखरेख में विद्यालय के बच्चो और शिक्षकों को लैब की व्यवहारिक जानकारी दी गई। उन्होंने इसरो के चंद्रयान, मंगलयान, गगनयान, आदित्य एल वन, राकेट एवं सैटेलाइट के अलावा भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी। सहायक प्रशिक्षक

अरविंद यादव ने बच्चों को ड्रोन की बनावट, उनके पुर्जो के नाम और कार्य करने के सिद्धांत की जानकारी दी। बच्चों के सामने ड्रोन को उड़ाकर दिखाया गया। प्रशिक्षक सूरज यादव ने बच्चों को टेलीस्कोप दिखाकर उनके पार्ट्स के नाम और कार्य के बारे में बताया। टेलीस्कोप की मदद से बच्चों को सूर्य के धब्बे भी दिखाए गए। खण्ड शिक्षा अधिकारी जय प्रकाश मौर्य ने कहा कि यह प्रयोगशाला बच्चों में विज्ञान और तकनीकी समझ विकसित करने में मील का पत्थर साबित होगा। अब छात्र अंतरिक्ष के रहस्य को भी जान सकेंगे। इनमें अंतरिक्ष और ग्रहों के बारे में वैज्ञानिक सोच विकसित होगा। व्योमिका स्पेस अकादमी के सीईओ गोविंद यादव में बताया कि प्रयोगशाला को संचालित करने के लिए ब्लॉक के 15 से 20 विज्ञान शिक्षकों का चयन कर उन्हें प्रशिक्षित किया जाएगा। इस अवसर कर प्रभारी प्रधानाध्यापक निशा पांडेय, अनुज शर्मा, राकेश कुमार, छेदी प्रसाद समेत अनेक शिक्षक और छात्र मौजूद रहे।

इलेक्ट्रिक बस और आटो चालक के बीच हुई झड़प

सोशल मीडिया पर विवाद का वीडियो हुआ वायरल

कौड़ीराम गोरखपुर । बांसगांव क्षेत्र के कौड़ीराम बस स्टेशन पर बुधवार की शाम करीब तीन बजे बांसगांव रोड पर बने बस स्टेशन पर इलेक्ट्रिक बस सवारी भरकर खड़ी थी। कुछ ऑटो चालक बस के आगे गाड़ी खड़ी कर सवारी भर रहे थे। बस चालक व कंडक्टर ने आपत्ति कर गाड़ी को आगे बढ़ाने को कहा। ऑटो चालक ने दबंगई दिखाते हुए बस के आगे गाड़ी खड़ी कर चालक को भद्दी भद्दी गालियां देने लगा। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। परंतु बांसगांव संदेश वायरल वीडियो की पुष्टि नहीं करता है। दोनों के विवाद में करीब

आधे घंटे तक बांसगांव और गोला रोड पर जाम और अफरातफरी का माहौल बना रहा। कुछ स्थानीय लोगों के हस्तक्षेप के बाद ऑटोचालक ने गाड़ी हटाया और आवागमन बहाल हुआ। स्थानीय लोगों का कहना है कि डग्गामार गाड़ियों की मनमानी से आए दिन विवाद और जाम लगता है। लोगों ने बताया कि जाम और विवाद होने के बावजूद स्थानीय कौड़ीराम चौकी पुलिस डग्गामार गाड़ियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करती है।

गगहा ब्लाक में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

गगहा, गोरखपुर। बुधवार को गगहा ब्लॉक सभागार में परियोजना निदेशक डॉक्टर नागेंद्र मिश्र की अध्यक्षता में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। मार्ग संस्था, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में गगहा ब्लाक के 6 ग्राम पंचायतों की महिलाएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन वीरेंद्र कुमार ने किया। मार्ग संस्था के संनो राय ने स्वच्छता, साफ–सफाई, दूषित पानी और महिलाओं के स्वास्थ्य व अधिकारों पर जानकारी दी। परियोजना निदेशक डॉ. नागेंद्र मिश्र ने स्वच्छता, स्वास्थ्य और पोषण पर विस्तार से जानकारी दी और लोगों को जागरूक किया। सहायक परियोजना निदेशक राजेंद्र प्रसाद भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में सरिता, पूजा, रिंकी, वंदना, सपना देवी, मनीष कनोजिया, संध्या, सीमा सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद योगी सरकार पर अखिलेश का तंज, बोले– अब गैराज में खड़ा हो जाएगा बुलडोजर

संवाददाता।

लखनऊ कन्नौज के सांसद कानपुर के सीसामऊ विधानसभा क्षेत्र में एक रैली को संबोधित कर रहे थे, जो उत्तर प्रदेश की उन नौ सीटों में से एक है जहां 20 नवंबर को उपचुनाव होने हैं। यूपी में उपचुनाव को लेकर वार–पलटवार की राजनीति तेज है। बुलडोजर मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत करते हुए समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ सरकार पर कटाक्ष किया। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि बुलडोजर अब गैराज में ही रहेगा। कन्नौज के सांसद कानपुर के सीसामऊ विधानसभा क्षेत्र में एक रैली को संबोधित कर रहे थे, जो उत्तर प्रदेश की उन नौ सीटों में से एक है जहां 20 नवंबर को उपचुनाव होने हैं। यूपी में उपचुनाव को लेकर वार–पलटवार की राजनीति तेज है। अखिलेश यादव ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने बीजेपी सरकार का प्रतीक बन चुके बुलडोजर के खिलाफ टिप्पणी की है। सरकार के खिलाफ इस फैसले के लिए मैं सुप्रीम कोर्ट को धन्यवाद देता हूं। उन्होंने तंज भरे लहजे में कहा कि जो घर तोड़ना जानते हैं उनसे आप क्या उम्मीद कर सकते हैं? कम से कम आज तो उनका बुलडोजर गैराज में खड़ा रहेगा, अब किसी का घर नहीं टूटेगा। उन्होंने कहा कि सरकार के खिलाफ इससे बड़ी टिप्पणी क्या हो सकती है? हमें कोर्ट पर पूरा भरोसा है, एक

दिन हमारे विधायक रिहा होंगे और हमारे बीच आएंगे और पहले की तरह काम करेंगे। यादव ने कवि प्रदीप की उन पंक्तियों का भी जिक्र किया जिन्हें सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में शामिल किया था। पंक्तियाँ इस प्रकार है ष्हर कोई एक घर का सपना देखता है

यूपी में होगा कई प्रदेशों की जनजाति संस्कृतियों का संगम–असीम अरुण
15 से 20 नवंबर तक चलेगा अंतरराष्ट्रीय जनजाति भागीदारी उत्सव

लखनऊ(आरएनएस)। प्रदेश के समाज कल्याण, अनुसूचित जाति एवम जनजाति कल्याण विभाग, पर्यटन एवं संस्कृति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 15 से 20 नवंबर तक अंतरराष्ट्रीय जनजाति भागीदारी उत्सव मनाया जाएगा। बिरसा मुंडा की जयंती (जनजातीय गौरव दिवस) पर उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी में मेजबान राज्य समेत देश–विदेश की लोक संस्कृति उतरेगी। आयोजन का शुभारंभ माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी करेंगे। इसमें स्लोवाकिया व वियतनाम के लोक कलाकारों द्वारा भी कार्यक्रम प्रस्तुत होगा।''अंतर्राष्ट्रीय जनजाति भागीदारी उत्सव'' से पूर्व लोक भवन स्थित मीडिया सेंटर में आयोजित कर्टेन रेजर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए समाज कल्याण मंत्री, अनुसूचित जाति–जनजाति कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) असीम अरुण ने बताया कि उद्घाटन समारोह के उपरांत 11 बजे से सांस्कृतिक समागम शोभायात्रा भी निकलेगी, जिसमें मेजबान उत्तर प्रदेश समेत अनेक राज्यों के कलाकार शामिल होंगे। प्रतिदिन शाम पांच से सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे। इसमें सहरिया, बुक्सा आदि जनजाति के लोकनृत्य का भी अवलोकन किया जा सकेगा तो वहीं दूसरी तरफ जनजाति लोकवाद्यों को भी मंचीय प्रदर्शन होगा। पोथी घर में जनजाति साहित्य के पुस्तकों का भी अवलोकन कर सकेंगे।

यातायात जागरूकता कार्यक्रम का किया गया आयोजन

–सड़क हादसों से बचने का एकमात्र उपाय यातायात नियमों का पालन

चित्रकूट(आरएनएस)। यातायात माह नवंबर के तहत यातायात निरीक्षक शैलेन्द्र सिंह एवं विकास पथ सेवा संस्थान के अध्यक्ष डॉ प्रभाकर सिंह गांधी के संयुक्त संयोजकत्व में कंपोजिट विद्यालय कछारपुरवा में यातायात पखवाड़ा के अंतर्गत यातायात जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के छात्र, शिक्षक, अभिभावक मौजूद रहे।विकास पथ सेवा संस्थान के निदेशक डॉ प्रभाकर सिंह गांधी ने कहा कि सभी लोगों को यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए। इससे दुर्घटनाएं नहीं होगी और सुरक्षित रहा जा सकता है। मौजूदा दौर में हादसे बहुत ज्यादा हो रहे है। जिसका बचाव यातायात के सही नियमों के पालन से ही किया जा सकता है। सरकार भी यही प्रयास कर रही है। यातायात निरीक्षक शैलेंद्र सिंह ने कहा कि यातायात नियमों का पालन करें। दाएं बाएं देखकर जेबरा क्रॉसिंग से रोड क्रॉस करना चाहिए। साथ ही सभी को सड़क पर बायें चलें। हेलमेट एवं सीट बेल्ट लगाकर सुरक्षित यात्रा करें। इस मौके पर संस्थान की तरफ से सभी बच्चों को जूस एवं शैंपू वितरित किया गया। कार्यक्रम का संचालन विद्यासागर सिंह ने किया। इस दौरान लवकुश सिंह, डॉ विकास सिंह, रचना यादव, सुशील पांडेय, सरला देवी, सोनू गौतम, दीपा देवी, ममता देवी, रंजना चंदेल, गरिमा सिंह, गीतांजलि देवी, सियाराम सिंह, प्रियंका द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

अंतर्राज्यीय गांजा तस्कर गिरफ्तार, 14.350 किग्राम गांजा बरामद

चित्रकूट(आरएनएस)। एसपी अरुण कुमार सिंह के निर्देशन में मादक पदार्थो की तश्करी एवं बिक्री की रोकथाम को चलाए जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी, क्षेत्राधिकारी राजापुर जय करन सिंह के पर्यवेक्षण में थाना रैपुरा व एसओजी की संयुक्त टीम ने चार अन्तर्राज्यीय गांजा तस्करों को 14.350 किग्राम सूखा गांजा के साथ गिरफ्तार किया है।बताया गया कि बुधवार को थाना रैपुरा व एसओजी की संयुक्त टीम ने मुखबिर की सूचना पर नयाचन्द्रा मोड़ सरैया रोड़ के पास से नरसिंह खिल्लों पुत्र सदन खिल्लो निवासी ग्राम मंत्रीयाम बोईपरि गुणा जनपद कोरापुट उड़ीसा, अत्रु हन्तल पुत्र बुदू हन्तल निवासी नुवागुड़ा थाना मतिलि जनपद मालकानगिरी उड़ीसा, शंकर पुत्र राजकुमार निवासी कुमली थाना रायघर जनपद नबरंगपुर उड़ीसा, दशरथ चिनम पुत्र साधु चिनम निवासी डब्बा जोड़ी मतिली जनपद मालकानगिरी उड़ीसा को गिरफ्तार किया है। जामातलाशी से 14.350 किग्रा सूखा गांजा बरामद हुआ। पूछताछ की गयी तो बताया कि उडीसा के रहने वाले है।

उत्तर प्रदेश प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर – केशव प्रसाद मौर्य

लखनऊ(आरएनएस)। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य बुधवार जनपद कानपुर देहात के अखण्ड परमधाम नंदिनी गौशाला सेवा समिति, मुक्तानगर, मूसानगर कानपुर देहात में 32वें भक्ति योग वेदांत संत सम्मेलन मद्भागवत कथा और शतचंडी महायज्ञ एवं सामूहिक विवाह कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर उन्होंने अपने सम्बोधन में सरकार की उपलब्धियों व सरकार द्वारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मा0 प्रधानमंत्री जी, व मा0 मुख्यमंत्री जी के कुशल नेतृत्व में देश एवं प्रदेश लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर है। हमारी सरकार की योजनाएं समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रही हैं व लोगों के जीवनस्तर में गुणात्मक सुधार हो रहा है। मा0 उप मुख्यमंत्री जी ने कहा कि हमारी सरकार विकसित भारत के संकल्प को लेकर लगातार आगे बढ़ रही है। इस अवसर पर उन्होंने क्षेत्र की समस्याओं के समाधान व विकास के बारे में लोगों को आश्वस्त किया। इस मौके पर पूर्व केंद्रीय मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति सहित विभिन्न जनप्रतिनिधि, अधिकारीगण व भारी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

71वाँ अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह–2024 कल से मनाया जायेगा

लखनऊ(आरएनएस)। 71वाँ अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह–2024 के अवसर पर उत्तर प्रदेश कोआपरेटिव यूनियन लि0 एवं इण्डियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लि0 के संयुक्त तत्वावधान में ''सहकारिता मंत्रालय की नई पहलों के माध्यम से सहकारी आन्दोलन को सशक्त बनाना'' विषय पर कल दिनांक 14 नवम्बर, 2024 को पूर्वाह्न 10:30 बजे लखनऊ स्थित चौधरी चरण सिंह पी0सी0यू0 सभागार में विचार गोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। गोष्ठी के मुख्य अतिथि सहकारिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जे0पी0एस0 राठौर होंगे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता उ0प्र0 कोआपरेटिव यूनियन लि0 के अध्यक्ष सुरेश गंगवार द्वारा की जायेगी। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रमुख सचिव सहकारिता एम0पी0 अग्रवाल तथा आयुक्त एवं निबंधक सहकारिता विभाग वी0एन0 सिंह होंगे।

कृषि मंत्री ने किया लखनऊ जनपद के विभिन्न खाद विक्रय केंद्रों का औचक निरीक्षण

लखनऊ(आरएनएस)। प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही द्वारा बुधवार को खाद के भंडारण की स्थिति तथा किसानों को की जा रही आपूर्ति की स्थिति देखने के लिए जनपद के विभिन्न स्थानों पर औचक निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न खाद विक्रय केंद्रों पर आए हुए किसानों से बातचीत की तथा अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।इस दौरान उन्होंने साधन सहकारी समिति मलौली गोसाईगंज लखनऊ तथा साधन सहकारी समिति शिवलर, गोसाईगंज में भंडारण की स्थिति तथा आपूर्ति की व्यवस्था को देखा। उन्होंने विभिन्न खाद विक्रय केंद्रों पर आए हुए किसानों से बातचीत की तथा उन्हें भरोसा दिलाया कि खाद की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध है इसलिए उन्हें आवश्यकता से अधिक भंडारण की जरूरत नहीं है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे स्वयं निगरानी कर यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक किसान को आसानी से खाद मिल सके। इस दौरान उनके साथ संयुक्त निदेशक अनिल पाठक तथा उपनिदेशक अनिल यादव उपस्थित रहे।

कृषि क्षेत्र के विकास के लिए 6.71 करोड़ रुपये की वित्तीय स्वीकृति

लखनऊ(आरएनएस)। वित्तीय वर्ष 2024–25 में कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर हेतु प्राविधानित धनराशिरू0 780.00 लाख में से अवशेष धनराशि रू0 650.00 लाख के सापेक्ष द्वितीय किश्तरू0 216.66 लाख (रु० दो करोड़ सोलह लाख छियासठ हजार) की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की गयी है।कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ की स्थापना हेतु प्राविधानित धनराशि रु0 700.00 के सापेक्ष अवशेष धनराशि रु0 583.34 लाख में से द्वितीय किश्त के रूप में धनराशि रु० 194.44 लाख (रु० एक करोड़ चौरान्नवे लाख चौवालिस हजार) की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की गयी है।इसके साथ ही कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहयोग से संचालित योजना के मद में धनराशि रु0 700.00 के सापेक्ष द्वितीय किश्त के रूप में रु0 194.44 लाख (रु० एक करोड़ चौरान्नवे लाख चौवालिस हजार) की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की गयी है।

सीतारमण ने रूस के प्रथम उप प्रधानमंत्री से मुलाकात की

नई दिल्ली

वित्त मंत्रालय ने 'एक्स' पर पोस्ट किया कि सीतारमण और मंटुरोव ने द्विपक्षीय और बहुपक्षीय हितों के मुद्दों पर चर्चा की। मंत्रालय ने कहा, ''उन्होंने दोनों देशों के बीच वित्तीय और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के उपायों पर विचारों का आदान–प्रदान किया। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को रूस के प्रथम उप प्रधानमंत्री डेनिस मंटुरोव से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने के उपायों पर चर्चा की। वित्त मंत्रालय ने 'एक्स' पर पोस्ट किया कि सीतारमण और मंटुरोव ने द्विपक्षीय और बहुपक्षीय हितों के मुद्दों पर चर्चा की। मंत्रालय ने कहा, ''उन्होंने दोनों देशों के बीच वित्तीय और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के उपायों पर विचारों का आदान–प्रदान किया।

ग्रामीण परिवारों को मनरेगा जाब कार्ड जारी करने में उत्तर प्रदेश सबसे आगे

लखनऊ(आरएनएस)। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के नेतृत्व व निर्देशन में गांवों के चहुंमुखी विकास के कार्य निर्बाध गति से चल रहे हैं। ग्रामीण परिवारों को काम के लिए बाहर पलायन न करना पड़े, इसलिए ग्रामीण परिवारों को उनके गांव में ही मनरेगा के तहत रोजगार उपलब्ध करायें जाने की मुकम्मल व्यवस्था की गयी है। ग्रामीण परिवारों को नियमानुसार रोजगार दिया जा रहा है।ग्रामीण परिवारों को जॉब कार्ड जारी करने में उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर है।प्रदेश में अब तक 1,59,04,869 परिवारों को जॉब कार्ड जारी किये जा चुके हैं। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के बेरोजगार और वंचित वर्गों के इच्छुक लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। यह योजना बेरोजगारों और रोजगार की जरूरत वाले लोगों के लिए "काम करने के अधिकार" की गारंटी देता है। एक वित्तीय वर्ष में कम से कम 100 दिन का मजदूरी रोजगार प्रदान करके ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका को बढ़ाने का निरंतर प्रयास जारी है। प्रदेश में सीतापुर जनपद ने अब तक सबसे ज्यादा परिवारों को जॉब कार्ड जारी किये हैं। बता दें कि महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम योजना के तहत स्थानीय ग्राम पंचायत में रजिस्ट्रेशन कराने वाले आवेदक को जारी किया जाने वाला दस्तावेज है।

उ.प्र. राज्य महिला आयोग द्वारा 165 नवीन प्रार्थना पत्रों पर त्वरित कार्यवाही करने के दिये गये निर्देश

लखनऊ(आरएनएस)। उ.प्र. राज्य महिला आयोग द्वारा प्रदेश में महिला उत्पीड़न की घटनाओं पर रोकथाम और पीड़ित महिलाओं को त्वरित न्याय दिलायें जाने के उद्देश्य से मा. अध्यक्ष डॉ. बबीता सिंह चौहान द्वारा आज आयोग मुख्यालय लखनऊ पर महिला जनसुनवाई की गयी। सुनवाई के दौरान 10 प्रचलित प्रकरणों के साथ आयोग मुख्यालय पर विभिन्न जनपदों से आये 16 पीड़ित आवेदिकाओंध्आवेदकों द्वारा दिये गये नवीन प्रार्थना पत्रों पर सुनवाई कर उनके निस्तारण के निर्देश दिये गये व साथ ही विभिन्न माध्यमों से आयोग कार्यालय में प्राप्त 165 नवीन प्रार्थना पत्रों पर त्वरित कार्यवाही करने के भी निर्देश दिये गये। इसके अतिरिक्त आज मा. अध्यक्ष डॉ. बबीता सिंह चौहान के निर्देशानुसार प्रदेश के 21 जनपदों में क्रमशः देवरिया, उन्नाव, सीतापुर, शामली, मेरठ, बुलन्दशहर, बिजनौर, औरैया, मऊ, झांसी, लखीमपुर खीरी, हाथरस, सोनभद्र, फतेहपुर, बरेली, पीलीभीत, ललितपुर, संतकबीरनगर, कौशाम्बी, कासगंज व बदायूं में आयोग की मा. उपाध्यक्ष एवं मा. सदस्यों के द्वारा भी मिशन–शक्ति फेज–5 के अन्तर्गत महिलाओं से सम्बन्धित विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं की जानकारी, विभिन्न महिला गृहो एवं आगनवाड़ी केन्द्रों का निरीक्षण तथा महिला उत्पीड़न की घटनाओं की उक्त जनपदों के वरिष्ठ प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों के साथ महिला जनसुनवाईइ समीक्षा बैठक कर पीड़ित महिलाओं की समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण कराया गया।

कैंसर पीड़ित के बेटे ने इलाज करने वाले डाक्टर को चाकू मारा,

एजेंसी।

चेन्नई लिस आयुक्त ए अरुण ने कलैग्नार सेंटेनरी अस्पताल का दौरा किया जहां यह घटना हुई थी। अरुण ने संवाददाताओं से कहा कि हम सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा करने आए हैं। हम (अधिकारियों के साथ) निर्देश देंगे और चर्चा करेंगे कि उनकी (डॉक्टरों की) सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए क्या उपाय किए जाएंगे। यह पहली घटना है, हम घटना की समीक्षा करेंगे और आपको आगे के अपडेट बताएंगे। चेन्नई पुलिस उस अस्पताल में सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा कर रही है जहां एक डॉक्टर को कैंसर रोगी के बेटे ने चाकू मार दिया था। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि वे चर्चा करेंगे कि डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए क्या उपाय किए जाने की आवश्यकता है। चेन्नई के पुलिस आयुक्त ए अरुण ने कलैग्नार सेंटेनरी अस्पताल का दौरा किया जहां यह घटना हुई थी। अरुण ने संवाददाताओं से कहा कि हम सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा करने आए हैं। हम (अधिकारियों के साथ) निर्देश देंगे और चर्चा करेंगे कि उनकी (डॉक्टरों की) सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए क्या उपाय किए जाएंगे। यह पहली घटना है, हम घटना की समीक्षा करेंगे और आपको आगे के अपडेट बताएंगे। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि आरोपी अपनी मां के इलाज के लिए अस्पताल आ रहा था। वह कोई नया व्यक्ति नहीं है. उनकी मां इलाज के लिए छह महीने से यहां हैं। एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि वह नशीली दवाओं का सेवन कर रहा होगा, हमें नहीं पता। अधिकारियों ने कहा कि मरीज की कई बार कीमो प्रक्रिया हुई थी और आरोपी को उसकी मां की स्थिति के बारे में बताया

पीडीए से मुख्यमंत्री के पेट में दर्द हो रहा है – अखिलेश यादव

लखनऊ(आरएनएस)। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने आज कानपुर के सीसामऊ विधानसभा उपचुनाव में समाजवादी पार्टी इंडिया गठबन्धन की प्रत्याशी नसीम सोलंकी के समर्थन में विशाल चुनावी जनसभा को सम्बोधित किया। अखिलेश यादव ने नसीम सोलंकी को भारी मतों से जिताने की अपील की। अखिलेश यादव ने कहा कि सीसामऊ का उपचुनाव विशेष परिस्थितियों में हो रहा है। जबरदस्ती चुनाव कराया जा रहा है। सरकार ने झूठे मुकदमे लगाकर विधायक इरफान सोलंकी पर कार्रवाई की। उसकी वजह से चुनाव में जाना पडा। हमें उम्मीद है न्यायालय से विधायक को न्याय मिलेगा और वह जेल से छूटेंगे। सीसामऊ विधानसभा उपचुनाव में समाजवादी प्रत्याशी नसीम सोलंकी की रिकार्ड मतों से जीत होगी। कहा कि भाजपा के लोग उपचुनाव की तारीख आने के बाद घबराए हुए है। चुनाव टालने का प्रयास किया। चुनाव टालने वाले हारेंगे। भाजपा सौ फीसदी विधानसभा उपचुनाव हारेगी। भाजपा नौ की नौ सीटे हारेगी। यूपी में उपचुनाव तो हारेगी ही भाजपा महाराष्ट्र का विधान सभा चुनाव भी हारेगी। मुख्यमंत्री की कुर्सी छिन जाएगी। भाजपा ने पहले अयोध्या में मिल्कीपुर चुनाव टाला, क्योंकि सर्वे में वह चुनाव हार रहे है। उपचुनाव 13 तारीख को होना था, लेकिन हार के डर से टालकर 20 तारीख कर दिया। अखिलेश यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री जी पीडीए के बारे में अनाप–शनाप बोल रहे है। पीडीए से मुख्यमंत्री के पेट में दर्द हो रहा है। जब से पीडीए का नारा चला है, ये घबराये घूम रहे हैं। भाजपा सरकार के पास एक भी बुनियादी सवाल का जवाब नहीं है। भाजपा सरकार नौजवानों को नौकरी रोजगार नहीं दे रही है। परीक्षा प्रणाली में हेराफेरी करती है। गलत प्रश्नोत्तर बनाते है। पेपर बनवाने वाले, लीक कराने वाले, परीक्षा रद्द कराने, कॉपी बदलवाने और आरक्षण का हक मारने वाले सब भाजपाई है। प्रयागराज में हजारों नौजवान धरने पर बैठे हैं। सरकार एक साथ परीक्षा नहीं कराना चाहती है। जो लोग वन नेशन, वन इलेक्शन का नारा देते हैं वह एक साथ परीक्षा नहीं करा पा रहे है। यह पता नहीं कैसी परीक्षा कराना चाह रहे है। योगी सरकार उत्तर प्रदेश के लिए अनुपयोगी है। लोक सेवा आयोग नौकरी नहीं दे पा रहा है। भाजपा सरकार में लगातार पेपर लीक हो रहा है। नौजवान भाजपा सरकार के भ्रष्टाचार से त्रस्त है। लोकसभा चुनाव में नौजवानो ने भाजपा के खिलाफ मतदान किया। नौजवान जानता है कि नौकरी देना और पेपर कराना भाजपा के एजेण्डे में नही है। भाजपा नौजवानों और उनके भविष्य को धोखा दे रही है। नौजवान इस युवा विरोधी सरकार को सत्ता से उखाड़ फेकेगा। नौजवान उपचुनाव में तो भाजपा को हरायेगा ही 2027 के विधान सभा चुनाव में भाजपा की सरकार हटाने का काम करेगा। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में मंहगाई, बेरोजगारी चरम पर है। आज पिछले कई वर्षो में सबसे ज्यादा मंहगाई दिखाई दे रही है। हर चीज के दाम बढ़ गये है। मंहगाई की वजह से त्यौहार भी फीके पड़ गये है। मंहगाई के कारण लोग दुखी है और परेशान है। भाजपा के लोग मुनाफा कमाकर मंहगाई बढ़ा रहे है। मंहगाई बढ़ाने के साथ किसानों के लिए संकट पैदा किया है। सरकार किसानों को धोखा दे रही है। पहले तो खाद की बोरी में चोरी होती थी अब तो डीएपी की पूरी बोरी ही चोरी हो रही है। किसानो को डीएपी और अन्य खाद नहीं मिल रही है। भाजपा के लोग डीएपी की कालाबाजारी कर रहे है।अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने प्रदेश की कानून व्यवस्था बर्बाद कर दी है। जो दंगे हो रहे है उसकी देाषी और जिम्मेदार भाजपा है। दंगा भाजपाइयों ने कराया। भाजपा के लोगो ने खुद भाजपाइयों पर दंगा भड़काने का केस दर्ज कराया।

फिटनेस और फार्म के लिए शमी को प्रथम श्रेणी मुकाबलों में दम–खम दिखाना होगा

संजय जगदाले ने कहा कि रणजी ट्रॉफी मैच के जरिये प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में लगभग एक साल बाद वापसी करने वाले तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी को फिटनेस और फॉर्म हासिल करने के लिए प्रथम श्रेणी मुकाबलों में दम–खम दिखाना होगा। पिछले साल विश्व कप 2023 के फाइनल के बाद से प्रतिस्पध र्ी क्रिकेट से दूर शमी के टखने में चोट थी। इंदौर (मध्यप्रदेश) । पूर्व राष्ट्रीय चयनकर्ता संजय जगदाले ने कहा कि रणजी ट्रॉफी मैच के जरिये प्रतिस्पध र्ी क्रिकेट में लगभग एक साल बाद वापसी करने वाले तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी को फिटनेस और फॉर्म हासिल करने के लिए प्रथम श्रेणी मुकाबलों में दम–खम दिखाना होगा। पिछले साल 19 नवंबर को विश्व कप 2023 के फाइनल के बाद से प्रतिस्पर्धी क्रिकेट से दूर शमी के टखने में चोट थी जिसके लिए उन्हें ऑपरेशन कराना पड़ा था। उन्होंने मध्यप्रदेश और बंगाल के बीच इंदौर के होलकर स्टेडियम में बुधवार से शुरू हुए रणजी ट्रॉफी मैच के जरिये प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी की।जगदाले ने स्टेडियम में इस मैच के दौरान 'पीटीआई–भाषा' से कहा, ''शमी कमाल के गेंदबाज रहे हैं। पिछले एक साल में भारत को उनकी गेंदबाजी की कमी निश्चित तौर पर खली है।'' भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के पूर्व सचिव ने कहा, ''हमें उम्मीद करनी चाहिए कि शमी जल्द ही अपने प्रदर्शन के शिखर पर पहुंचेंगे लेकिन फिटनेस और फॉर्म हासिल करने के लिए उन्हें अभी प्रथम श्रेणी मैच खेलने होंगे।''यह पूछे जाने पर कि आगामी बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी प्रतियोगिता में भारतीय टीम को शमी की कमी खलेगी, जगदाले ने कहा, ''अनुभवी शमी की खूबियों वाला कोई गेंदबाज एकदम सामने नहीं आ सकता, लेकिन इस मुकाबले में उनकी कमी किसी युवा गेंदबाज के लिए मौका भी साबित हो सकती है जिसका फायदा उठाकर वह भारतीय टीम में खुद को स्थापित कर सकता है।'' इस बीच, शमी के कई युवा प्रशंसक अपने पसंदीदा गेंदबाज की मैदान पर वापसी के गवाह बनने होलकर स्टेडियम पहुंचे। ऐसे ही एक प्रशंसक रेहान पटेल ने कहा,''भारत को बढ़िया तेज गेंदबाज की बहुत जरूरत है। हम उम्मीद कर रहे हैं कि शमी रणजी ट्रॉफी मुकाबले में बेहतरीन प्रदर्शन करके भारतीय टीम में वापसी की राह बनाएंगे।

इन स्पिनर्स पर बरस सकता है करोड़ों रुपये, इस लिस्ट में 3 विदेशी खिलाड़ी भी शामिल

यूजवेंद्र चहल, आर अश्विन, वॉशिंगटन सुंदर और हरप्रीत बरार समेत 7 स्पिनर्स पर आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन में करोड़ों की बोली लग सकती है। इस सूची में तीन विदेशी स्पिनर यानी न्यूजीलैंड के मिचेल सैंटनर, अफगानिस्तान के नूर अहमद और श्रीलंका के वानिंदु हसरंगा भी शामिल हैं। नवंबर का महीना क्रिकेट और आईपीएल फैंस के लिए किसी त्योहार से कम नहीं होने वाला है। दरअसल, इसी महीने की 24 और 25 तारीख को साऊदी के जेद्दा में दुनिया भर के कई खिलाड़ियों के नाम पर बोली लगेगी। इसके लिए सभी फ्रेंचाइजीस ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। वहीं इस मेगा ऑक्शन से पहले सभी 10 टीमें रिटने किए गए खिलाड़ियों की सूची बीसीसीआई को सौंप चुका है। लेकिन कई खिलाड़ी ऐसे भी रहे जिनका आईपीएल में बेहतरीन प्रदर्शन रहा लेकिन उन्हें टीमों ने रिलीज कर दिया। जहां यूजवेंद्र चहल, आर अश्विन, वॉशिंगटन सुंदर और हरप्रीत बरार समेत 7 स्पिनर्स पर आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन में करोड़ों की बोली लग सकती है। इस सूची में तीन विदेशी स्पिनर यानी न्यूजीलैंड के मिचेल सैंटनर, अफगानिस्तान के

नूर अहमद और श्रीलंका के वानिंदु हसरंगा भी शामिल हैं। आईपीएल इतिहास में युजवेंद्र चहल सबसे ज्यादा सफल गेंदबाज हैं। वह सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं, जिन्होंने 7.84 की इकॉनमी और 22.45 अब तक 205 मैच में 160 विकेट लिए हैं। वह राजस्थान रॉयल्स के साथ 2022 से जुड़े थे, लेकिन इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया। युजवेंद्र चहल आईपीएल में इससे पहले 2014 से 2021 तक रॉयल चौलेंजर्स बेंगलुरु का हिस्सा रहे थे। आर अश्विनरविचंद्रन अश्विन आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में छठे नंबर पर हैं। उन्होंने 7.12 की इकॉनमी और 29.83 के औसत से अब तक 212 मैच में 180 विकेट झटके हैं। अश्विन 2022 से राजस्थान रॉयल्स से जुड़े थे, लेकिन इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया। अश्विन इससे पहले सीएसके, राइजिंग सुपर जायंट्स, किंग्स इलेवन पंजाब और दिल्ली कैपिटल्स के लिए खेल चुके हैं। वाशिंगटन सुंदर वाशिंगटन सुंदर आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की लिस्टी में 99वें नंबर पर हैं।

आईपीएल 2025 गुजरात टाइटंस से जुड़े पार्थिव पटेल, टीम में संभालेंगे ये जिम्मेदारी

पार्थिव पटेल को गुजरात टाइटंस ने आईपीएल 2025 से पहले अपनी टीम में शामिल किया है। पार्थव ळज में असिस्टेंट और बैटिंग कोच की जिम्मेदारी संभालेंगे। पार्थिव पटेल आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स, कोच्चि टस्कर्स केरला, डेक्कर चार्जर्स, सनराइजर्स हैदराबाद, आरसीबी और मुंबई इंडियंस जैसी फ्रेंचाइजी के लिए खेल चुके हैं। भारत के पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज

पार्थिव पटेल को गुजरात टाइटंस ने आईपीएल 2025 से पहले अपनी टीम में शामिल किया है। पार्थव ळज में असिस्टेंट और बैटिंग कोच की जिम्मेदारी संभालेंगे। पार्थिव पटेल आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स, कोच्चि टस्कर्स केरला, डेक्कर चार्जर्स, सनराइजर्स हैदराबाद, आरसीबी और मुंबई इंडियंस जैसी फ्रेंचाइजी के लिए खेल चुके हैं। 2022 में गुजरात टाइटंस ने लीजेंड्स लीग क्रिकेट के लिए उन्हें सिलेक्ट किया था और 2023 लीजेंड्स लीग क्रिकेट में उन्होंने कप्तानी भी की थी। वहीं इसकी जानकारी गुजरात टाइटंस ने अपने ऑफिशियल सोशल मीडिया हैंडल

चीन में 62 साल के बूढ़े ने लोगों परअचानक क्यों दौड़ाई कार, जिनपिंग ने दिया ये आदेश

यह घटना ऐसे समय हुई जब चीन ने अपना छह दिवसीय बहुचर्चित एयर शो शुरू किया। इसमें विदेशी मीडिया के अलावा कई विदेशी नागरिक भी शामिल हो रहे हैं। घटनास्थाल एयर शो के स्थान से करीब 40 किलोमीटर दूर है। घटना पर चिंता व्यक्त करते हुए चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने घायलों के इलाज के लिए हरसंभव प्रयास करने का आग्रह किया। समाचार एजेंसी शिन्हुआ के मुताबिक उन्होंने निर्देश दिया है कि अपराधी को कानून के अनुसार कड़ी सजा दी जाए।चीन के झुहाई शहर में 62 साल के बुजुर्ग ने कार से कई लोगों को कुचल दिया। इस हादसे में 35 लोगों की मौत हो गई और 43 अन्य गंभीर रूप से घायल हैं। पुलिस ने फैन नाम के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने बताया कि आरोपी तलाक के बाद पत्नी के साथ संपत्ति के बंटवारे को लेकर नाराज था। चीन झुहाई घटना गंभीर घायल दक्षिणी चीन के झुहाई में यह घटना स्पोर्ट सेंटर के पास हुई, जहां लोग एक्सरसाइज करने पहुंचे थे।यह घटना ऐसे समय हुई जब चीन ने अपना छह दिवसीय बहुचर्चित एयर शो शुरू किया। इसमें विदेशी मीडिया के अलावा कई विदेशी नागरिक भी शामिल हो रहे हैं। घटनास्थाल एयर शो के स्थान से करीब 40 किलोमीटर दूर है। घटना पर चिंता व्यक्त करते हुए चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने घायलों के इलाज के लिए हरसंभव प्रयास करने का आग्रह किया। समाचार एजेंसी शिन्हुआ के मुताबिक उन्होंने निर्देश दिया है कि अपराधी को कानून के अनुसार कड़ी सजा दी जाए। शी ने सभी स्थानीय लोगों और संबंधित प्राधिकारियों से इस मामले से सबक लेने तथा शुरुआत में खतरे को कम करने और नियंत्रण को मजबूत करने का निर्देश दिया है। चीन के प्रधानमंत्री ली क्वींग ने घटना के बाद की स्थिति से उचित तरीके से निपटने, मामले की शीघ्र जांच करने तथा कानून के अनुसार अपराधी को कड़ी सजा देने का आह्वान किया है। हाल के महीनों में चीन में समय–समय पर कार से रौंदने और नागरिकों पर चाकू से हमले आदि की घटनाएं हुई हैं। सुरक्षा अधिकारी अक्सर इन घटनाओं के लिए असंतुष्ट तत्वों को दोषी ठहराते हैं। चीन के मध्य हुनान प्रांत की राजधानी चांग्शा शहर में जुलाई मे एक वाहन ने पैदल यात्रियों को रौंद दिया था जिसमें आठ लोगों की मौत हो गई और पांच अन्य घायल हो गए थे।

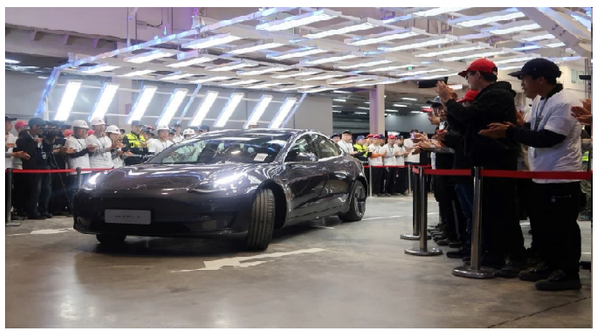

50 सेकंड में आधा देश निगल गया इजरायल, नेतन्याहू की 21 गांवों को खाली करने की वार्निंग

लेबनान ने कहा कि इजरायली हमलों में अलग–अलग इलाकों में 33 लोग मारे गए हैं। इजरायल ने हमलों में हिजबुल्लाह का गढ़ कहे जाने वाले बेरूत के दक्षिणी उपनगरों के साथ–साथ उन इलाकों को भी निशाना बनाया, जहां इस गुट का प्रभाव नहीं है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि बेरूत के दक्षिण में चौफ क्षेत्र के एक शहर पर हुए हमले में ही 15 लोगों की मौत हो गई। इनमें आठ महिलाएं और चार बच्चे शामिल थे। इजरायल ने साउथ लेबनान के 21 गांव को खाली करने की वार्निंग जारी की है। अपने देश के लोगों की सुरक्षा के लिए कोई देश किस हद तक जा सकता है वो इजरायल ने 50 सेकेंड में बता दिया है। गुस्से में बेकाबू हो चुके इजरायल ने पूरा गाजा और आधा लेबनान साफ कर दिया है। इजरायल ने लेबनान पर एक और भीषण हमला किया है। राजधानी बेरूत में इजरायली सैनिकों ने एक घर को निशाना बनाया। दक्षिण बेरूत में धुएं और धूल के बादल उठते दिख रहे हैं। यह लगातार दूसरा दिन है जब लेबनान की राजध ानी पर हवाई हमले हुए हैं। वहीं लेबनानी गुट हिजबुल्लाह की ओर से भी इजरायल पर रॉकेट से अटैक किया गया है। हिजबुल्लाह के रॉकेट से किए हमले में इजरायल के उत्तरी शहर नाहरिया में दो लोगों की मौत हुई है। इजरायली अधिकारियों ने दो मौतों की पुष्टि करते हुए कहा कि लेबनान की धरती से ये रॉकेट दागे गए थे। लेबनान ने कहा कि इजरायली हमलों में अलग–अलग इलाकों में 33 लोग मारे गए हैं। इजरायल ने हमलों में हिजबुल्लाह का गढ़ कहे जाने वाले बेरूत के दक्षिणी उपनगरों के साथ–साथ उन इलाकों को भी निशाना बनाया, जहां इस गुट का प्रभाव नहीं है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि बेरूत के दक्षिण में चौफ क्षेत्र के एक शहर पर हुए हमले में ही 15 लोगों की मौत हो गई। इनमें आठ महिलाएं और चार बच्चे शामिल थे। इजरायल ने साउथ लेबनान के 21 गांव को खाली करने की वार्निंग जारी की है। अधिकारियों के मुताबिक, गाजा के उत्तरी शहर बेत हनून में एक घर पर मंगलवार को हुए हमले में 15 लोग मारे गए, जिनमें अल जजीरा के पत्रकार होसम शबात के रिश्तेदार भी शामिल हैं, जो उत्तरी क्षेत्र से रिपोर्टिंग कर रहे थे। कमल अदवान अस्पताल के निदेशक होसम अबू सफिया ने बताया कि हमले में बतौर चिकित्सक कार्यरत मोहम्मद शबात, उनकी पत्नी दीमा एवं बेटी एलिया की मौत हो गई। फलस्तीन के चिकित्सा अधिकारियों ने बताया कि मध्य और दक्षिणी गाजा में हमलों में 20 अन्य लोग मारे गए।

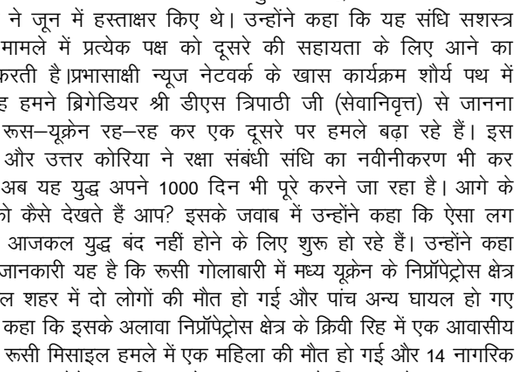

रूस की बची सप्लाई समय पर नहीं दे पायेगा भारत की रक्षा पर पड़ेगा असर!

ब्रिगेडियर श्री डीएस त्रिपाठी जी (सेवानिवृत्त) ने कहा कि भारत रूसी एस–400 वायु रक्षा प्रणाली की शेष दो इकाइयों के लिए काफी समय से इंतजार कर रहा है। माना जा रहा है कि यह इंतजार और बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि शुरुआत में डिलीवरी 2025 तक होने की उम्मीद थी।प्रभासाक्षी न्यूज नेटवर्क के खास कार्यक्रम शौर्य पथ में इस सप्ताह हमने ब्रिगेडियर श्री डीएस त्रिपाठी जी (सेवानिवृत्त) से जानना चाहा कि ऐसी रिपोर्टें हैं कि रूस–यूक्रेन युद्ध के चलते भारत को रूस से एस–400 की आपूर्ति में तीन साल का विलंब होगा और परमाणु पनडुब्बी की आपूर्ति भी अनिश्चितकाल के लिए टल गयी है, इस पर आपका क्या कहना है? हमने यह भी पूछा कि रूस के उप प्रधानमंत्री भारत आये और दोनों देशों ने वायु रक्षा को मजबूत बनाने के लिए 'पैंट्सिर वेरिएंट' समझौते पर हस्ताक्षर किये, इससे भारत को क्या लाभ होगा? इसके जवाब में उन्होंने कहा कि इसमें कोई दो राय नहीं कि युद्ध के लंबा खिंचने से रूस की ओर से विभिन्न देशों के साथ किये गये रक्षा समझौतों पर असर पड़ा है। उन्होंने कहा कि हमें यह स्वीकार करना होगा कि भारत का एअर डिफेंस सिस्टम इतना मजबूत नहीं रहा है और वर्तमान में जिस तरह के संघर्ष चल रहे हैं उसको देखते हुए भारत को अपनी वायु रक्षा प्रणाली को तुरंत मजबूत करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि यह प्रकरण यह भी दर्शाता है कि रक्षा क्षेत्र में पूर्ण आत्मनिर्भरता कितनी जरूरी है।ब्रिगेडियर श्री डीएस त्रिपाठी जी (सेवानिवृत्त) ने कहा कि भारत रूसी एस–400 वायु रक्षा प्रणाली की शेष दो इकाइयों के लिए काफी समय से इंतजार कर रहा है। माना जा रहा है कि यह इंतजार और बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि शुरुआत में डिलीवरी 2025 तक होने की उम्मीद थी, लेकिन अब इसके 2026 की शुरुआत तक मिलने का अनुमान है। उन्होंने कहा कि यह देरी ऐसे समय में हुई है जब क्षेत्रीय सुरक्षा तनावपूर्ण बनी हुई है, खासकर चीन के साथ उत्तरी सीमा पर। उन्होंने कहा कि ''–400 वायु रक्षा प्रणाली की खरीद, जिसे दुनिया में

सबसे उन्नत में से एक माना जाता है, को 2018 में अंतिम रूप दिया गया था जब भारत और रूस ने पांच इकाइयों के लिए 5. 43 बिलियन डॉलर के समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। उन्होंने कहा कि यह प्रणाली 400 किमी तक की दूरी पर विमान, ड्रोन और बैलिस्टिक मिसाइलों सहित कई हवाई खतरों को ट्रैक करने और उन्हें बेअसर करने में सक्षम है। ब्रिगेडियर श्री डीएस त्रिपाठी जी (सेवानिवृत्त) ने कहा कि पहली –400 दिसंबर 2021 में भारत पहुंची थी। इसके बाद अगले दो वर्षों में दूसरी और तीसरी इकाइयों की डिलीवरी और परिचालन शुरू होना था ताकि पश्चिमी और पूर्वी दोनों क्षेत्रों में भारत की रक्षा स्थिति मजबूत हो सके। उन्होंने कहा कि इन इकाइयों को शामिल करना भारत की वायु रक्षा ग्रिड को मजबूत करने में महत्वपूर्ण रहा है, खासकर पाकिस्तान और चीन जैसे विरोधि यों से संभावित हवाई खतरों को देखते हुए। उन्होंने कहा कि पहले कोविड–19 महामारी के कारण उत्पन्न व्यवधानों के कारण डिलीवरी में देरी हुई उसके बाद यूक्रेन में चल रहे संघर्ष के कारण देरी हो रही है। उन्होंने कहा कि यूक्रेन युद्ध ने रूस के सैन्य–औद्योगिक परिसर और रक्षा अनुबंधों को पूरा करने की क्षमता को गंभीर रूप से प्रभावित किया है।ब्रिगेडियर श्री डीएस त्रिपाठी जी (सेवानिवृत्त) ने कहा कि शेष दो –400 इकाइयों के आगमन में देरी ने भारतीय वायु सेना के भीतर चिंता बढ़ा दी है, जिसने देश के हवाई क्षेत्र की सुरक्षा में इन प्रणालियों के महत्व पर लगातार प्रकाश डाला है। उन्होंने कहा कि देरी को ध्यान में रखते हुए, भारतीय वायुसेना और रक्षा मंत्रालय अपनी तैयारी सुनिश्चित करने के लिए वैकल्पिक समाध ान तलाश रहे हैं। इसमें अतिरिक्त वायु रक्षा प्रणालियों की संभावित खरीद शामिल है। उन्होंने कहा कि अभी तीन मौजूदा एस–400 प्रणालियों की तैनाती ने भारत की रक्षात्मक क्षमताओं को बढ़ाया है, जिससे उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में अधि क मजबूत निगरानी है। उन्होंने कहा कि वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर चीन के साथ जारी गतिरोध ने एक मजबूत वायु रक्षा नेटवर्क बनाए रखने की आवश्यकता को रेखांकित किया है। एस–400 की देरी एक महत्वपूर्ण चुनौती है क्योंकि भारत का लक्ष्य अपनी प्रतिरोध क क्षमता को मजबूत करना है। उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त, उन्नत मिसाइल प्रणालियों और पांचवीं पीढ़ी के विमानों में चीन निवेश करता जा रहा है, ऐसे में भारत के लिए जरूरी है कि वह एस–400 प्रणाली को पूर्ण रूप से तैनात करके रणनीतिक बढ़त बनाए रखे। ब्रिगेडियर श्री डीएस त्रिपाठी जी (सेवानिवृत्त) ने कहा कि जहां तक रूस के प्रथम उप प्रधानमंत्री की भारत यात्रा की बात है तो यह काफी महत्वपूर्ण रही। उन्होंने कहा कि भारत में रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के एक प्रमुख उपक्रम ने 'पैंट्सिर वायु रक्षा मिसाइल–गन प्रणाली' के वेरिएंट पर सहयोग के लिए रूस के 'रोसोबोरोनएक्सपोर्ट' के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। उन्होंने कहा कि पैंट्सिर वायु रक्षा प्रणाली ऐसा प्लेटफॉर्म है, जिसे अहम सैन्य और औद्योगिक केंद्रों को हवाई खतरों से बचाने व वायु रक्षा इकाइयों को मजबूत बनाने के लिए बनाया गया है। उन्होंने कहा कि रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम (डीपीएसयू) के अनुसार, भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (बीडीएल) और 'रोसोबोरोनएक्सपोर्ट' के बीच समझौता ज्ञापन पर हाल ही में गोवा में पांचवें आईआरआईजीसी (भारत–रूस अंतर–सरकारी आयोग उपसमूह) के दौरान हस्ताक्षर किए गए। उन्होंने कहा कि बीडीएल को 1970 में रक्षा मंत्रालय के तहत एक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के रूप में शामिल किया गया था। इसका उद्देश्य भारतीय सशस्त्र बलों के लिए निर्देशित मिसाइल प्रणालियों और संबद्ध उपकरणों का निर्माण करना था। बीडीएल का मुख्यालय हैदराबाद में स्थित है। उन्होंने कहा कि बीडीएल ने अपने बयान में कहा है कि भारत डायनेमिक्स लिमिटेड और रूस के 'रोसोबोरोनएक्सपोर्ट' ने पैंट्सिर वेरिएंट पर सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

दिनों से आपस में युद्ध लड़ रहे, झुकने को कोई तैयार नहीं, आखिर क्या होगा अंजाम ?

ब्रिगेडियर श्री डीएस त्रिपाठी जी (सेवानिवृत्त) ने कहा कि उत्तर कोरिया ने रूस के साथ पारस्परिक रक्षा संधि की पुष्टि की है, जिस पर दोनों देशों के नेताओं ने जून में हस्ताक्षर किए थे। उन्होंने कहा कि यह संधि सशस्त्र हमले के मामले में प्रत्येक पक्ष को दूसरे की सहायता के लिए आने का आह्वान करती है।प्रभासाक्षी न्यूज नेटवर्क के खास कार्यक्रम शौर्य पथ में इस सप्ताह हमने ब्रिगेडियर श्री डीएस त्रिपाठी जी (सेवानिवृत्त) से जानना चाहा कि रूस–यूक्रेन रह–रह कर एक दूसरे पर हमले बढ़ा रहे हैं। इस बीच रूस और उत्तर कोरिया ने रक्षा संबंधी संधि का नवीनीकरण भी कर लिया है। अब यह युद्ध अपने 1000 दिन भी पूरे करने जा रहा है। आगे के परिदृश्य को कैसे देखते हैं आप? इसके जवाब में उन्होंने कहा कि ऐसा लग रहा है कि आजकल युद्ध बंद नहीं होने के लिए शुरू हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि ताजा जानकारी यह है कि रूसी गोलाबारी में मध्य यूक्रेन के निप्रॉपेट्रोस क्षेत्र के निकोपोल शहर में दो लोगों की मौत हो गई और पांच अन्य घायल हो गए हैं। उन्होंने कहा कि इसके अलावा निप्रॉपेट्रोस क्षेत्र के क्रिवी रिह में एक आवासीय इमारत पर रूसी मिसाइल हमले में एक महिला की मौत हो गई और 14 नागरिक घायल हो गए। उन्होंने कहा कि इसके अलावा खबर है कि रूस के रक्षा मंत्रालय

ने जानकारी दी है कि रूसी सेना ने यूक्रेन के पूर्वी खार्किव क्षेत्र में कोलिस्नीकिव्का की बस्ती पर कब्जा कर लिया है। ब्रिगेडियर श्री डीएस त्रिपाठी जी (सेवानिवृत्त) ने कहा कि इस युद्ध में यह भी महत्वपूर्ण है कि यूक्रेन की सेनाएं रूस के कुर्स्क क्षेत्र में लगभग 50,000 दुश्मन सैनिकों से लड़ रही हैं। इस बारे में यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने कहा है कि यूक्रेन पूर्व में पोक्रोव्स्क और कुराखोव मोर्चों पर अपनी स्थिति को ष्काफी मजबूतष् कर रहा है जहां सबसे सक्रिय लड़ाई हो रही है। उन्होंने कहा कि इसी बीच यह भी खबर है कि यूरोपीय संघ के विदेश नीति प्रमुख जोसेप बोरेल ने कहा है कि यूरोपीय संघ ने यूक्रेन को युद्ध के लिए 980,000 से अधिक गोलों की आपूर्ति की है और इस साल के अंत तक इसके 1 मिलियन का आंकड़ा पार करने की योजना है। ब्रिगेडियर श्री डीएस त्रिपाठी जी (सेवानिवृत्त) ने साथ ही कहा कि उत्तर कोरिया ने रूस के साथ एक पारस्परिक रक्षा संधि की पुष्टि की है, जिस पर दोनों देशों के नेताओं ने जून में हस्ताक्षर किए थे। उन्होंने कहा कि यह संधि सशस्त्र हमले के मामले में प्रत्येक पक्ष को दूसरे की सहायता के लिए आने का आह्वान करती है। उन्होंने कहा कि युद्ध के मोर्चे पर एक और अहम खबर यह है कि क्रेमलिन ने उन रिपोर्टों को खारिज कर दिया है कि अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से बात की थी। उन्होंने कहा कि यह खंडन तब आया है जब अज्ञात सूत्रों ने दावा किया था कि ट्रम्प ने पुतिन को कॉल पर कहा था कि मॉस्को को यूक्रेन में अपना युद्ध नहीं बढ़ाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस युद्ध में फिलहाल यही संकेत मिल रहे हैं कि इसका अंत दूर दूर तक नजर नहीं आ रहा है। रूसी सेना लगातार आगे बढ़ रही है और अपने लक्ष्य को हासिल करने तक वह ऐसा करती रहेगी।

शहबाज शरीफ हो गए लापता, पाकिस्तान के पीएम को दूरबीन लेकर ढूंढने लगे लोग

फोटो में सऊदी प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के साथ महत्वपूर्ण देशों के लीडर तो पीछे की लाइन में पाकिस्तान के वजीर ए आजम खड़े दिखाई दिए। बड़ी मुश्किल से उनका चेहरा दिखाई दे रहा था। तस्वीर में ऐसा लग रहा था कि मानो शहबाज अपना चेहरा दिखाने के लिए किसी तरह अपने सामने के लीडर की बगल से झांक रहे हैं। दुनिया के किसी भी मंच पर किसी भी देश के राष्ट्राध्यक्ष की हैसियत को मांपने का एक मीटर निर्धारित होता है। इसे ग्रुप फोटोग्राफ कहा जाता है। इन सब के बीच एक तस्वीर की चर्चा खूब हो रही है, इस तस्वीर में पाकिस्तान के वजीर–ए–आलम भी मौजूद हैं। हालांकि उन्हें ढूंढ़ने के लिए पाकिस्तानियों को भी दूरबीन का सहारा लेना पड़ेगा। असर में सऊदी अरब में एक समित हुई। इस दौरान पाकिस्तानी पीएम को पीछे की लाइन में खड़ा कर दिया गया। जिसके बाद मजाकिया लहजे में कहा जाने लगा कि रियाद पहुंचते ही पाकिस्तान के पीएम लापता हो गए। सऊदी अरब के रियाद में फिलिस्तीन को लेकर अरब इस्लामिक समिट हुई। इसमें इस्लामिक देशों के टॉप लीडर शामिल हुए। शहबाज शरीफ भी समित में हिस्सा लेने के लिए सज धज कर रियाद पहुंचे। लेकिन जब ग्रुप फोटो आई तो पाकिस्तान की हैसियत सामने आई। फोटो में सऊदी प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के साथ महत्वपूर्ण देशों के लीडर तो पीछे की लाइन में पाकिस्तान के वजीर ए आजम खड़े दिखाई दिए। बड़ी मुश्किल से उनका चेहरा दिखाई दे रहा था। तस्वीर में ऐसा लग रहा था

बाइडन यूक्रेन युद्ध को अगले साल जारी रखने के लिए भेज रहे हैं सहायता ब्लिंकन

रक्षा मंत्रालय पेंटागन के बयान के एक दिन बाद किया है जिसमें दावा किया गया है कि रूस मदद के लिए आए अधिकांश उत्तर कोरियाई सैनिकों को कुर्स्क सीमा क्षेत्र में रूसी धरती से यूक्रेन की सेना को खदेड़ने के लिए तैनात किया है। अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने बुधवार को कहा कि बाइडन प्रशासन अपने कार्यकाल के अंतिम महीनों में यह सुनिश्चित करने के लिए कटिबद्ध है कि यूक्रेन के पास रूस की आक्रमकता का अगले साल भी मुकाबला करने के संसाधान उपलब्ध रहें।उन्होंने कहा कि बाइडन प्रशान यूक्रेन को यथासंभव सहायता भेज रहा है ताकि वह रूसी सेना को रोक सके और किसी भी संभावित

शांति वार्ता में मजबूत स्थिति में हो। ब्लिंकन ने कहा, ''राष्ट्रपति बाइडन यह सुनिश्चित करने के लिए कटिबद्ध हैं कि हमारे पास उपलब्ध प्रत्येक डॉलर को अब से लेकर 20 जनवरी के बीच यूक्रेन भेज दिया जाए।''अमेरिका के नए राष्ट्रपति के तौर पर डोनाल्ड ट्रंप शपथ लेंगे। ब्लिंकन ने ब्रसेल्स की यात्रा के दौरान कहा, नाटो देशों को अपने प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यूक्रेन के पास 2025 में प्रभावी ढंग से लड़ने के लिए धन, गोला–बारूद और सैन्य बल हों ताकि वह मजबूत स्थिति में शांति वार्ता करने को सक्षम हो।''इस बीच, रूस ने 73 दिनों के बाद पहली बार बुध वार को यूक्रेन की राजधानी कीव को मिसाइलों और ड्रोन से निशाना बनाया। रूस ने यह हमला अमेरिका के रक्षा मंत्रालय पेंटागन के बयान के

स्वामी,प्रकाशक,मुद्रक,**सम्पादक कपिल देव शुक्ल** द्वारा विभव प्रिंटर्स गाटा सं025 लोलेपुर सुलतानपुर उ० प्र०. से मुद्रित तथा सलीमपुर ग्रेन्ट, पो० व थाना कुरेभार, जिला–सुलतानपुर (उ०प्र०) से प्रकाशित **सम्पादक– कपिल देव शुक्ल**,
मो० 9415739288,9721748962
E-mail: kdshukla-79@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र सुल्तानपुर न्यायालय होगा।